मार्च 2006
Rs. 13 /-
चन्दामामा

# जल की आश्चर्यजनक दुनिया

चिलिका – एशिया की खारे जल की विशालतम झील – सारे संसार को आकर्षित करती है। साइबेरिया के झुण्ड के झुण्ड प्रवासी पक्षी प्रति वर्ष हजारों मील से चिलिका से मिलने आते हैं। और डॉलफिन जहाँ अक्सर अकस्मात् उछलते रहते हैं। झील में फैले मनमोहक द्वीपों में से अपनी मन पसन्द को चुनिये – नाश्ते के द्वीप पर प्रातःकाल या देवी कालीजय द्वीप पर अपराह्न काल। लेकिन यह सुनिश्चित कर लें कि रात्रि काल में आप हनिमून द्वीप पर हों !

mudra 1758

ORISSA

For details contact: Ph: 0674 2432177, e-mail: ortour@orissatourism.gov.in
website: www.orissatourism.gov.in

ORISSA

सुरम्य • सुशान्त • भव्य

चन्दामामा

सम्पुट-५७ मार्च २००६ सञ्चिका - ३

## अंतरंग



## विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

**For USA and Canada**
**Single copy $2**
**Annual subscription $20**

*Remittances in favour of Chandmama India Ltd.*
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

**शुल्क**

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १५० रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

**Statement about Ownership of**
**CHANDAMAMA (Hindi)**
Rule 8 (Form VI), Newspaper
(Central) Rules, 1956

1. **Place of Publication**
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
2. **Periodicity of Publication**
   MONTHLY
   1st of each calendar month
3. **Printer's Name**
   B. VISWANATHA REDDI

   **Nationality**
   INDIAN

   **Address**
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
4. **Publisher's Name**
   B. VISWANATHA REDDI

   **Nationality**
   INDIAN

   **Address**
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
5. **Editor's Name**
   B. VISWANATHA REDDI
   (Viswam)

   **Nationality**
   INDIAN

   **Address**
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
6. Name and Address of individuals who own the newspaper
   Chandamama India Ltd.

   Board of Directors:
   1. P. Sudhir Rao
   2. Vinod Sethi
   3. B. Viswanatha Reddi
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097

*I,* **B. Viswanatha Reddi,** *do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.*

(Sd.) B. VISWANATHA REDDI
1st March [illegible] *Publisher*

# परीक्षा से भयभीत क्यों?

भारत के स्कूलों में वार्षिक परीक्षाएँ मार्च महीने में आरम्भ होती हैं। हम प्रायः ''परीक्षा ज्वर'' के विषय में सुनते हैं। वार्षिक परीक्षाएँ यह निर्णय करती हैं कि छात्र सफल होकर ऊँची कक्षा में जायेगा या फेल होकर उसी कक्षा में एक साल और पुराने पाठ्यक्रम को दुहरायेगा। स्वाभाविक है कि छात्र परीक्षा फल जानने के लिए चिन्तित होंगे।

स्कूल के अधिकारियों ने परीक्षा के डर को कम करने के लिए एक रास्ता निकाला है। अधिकांश स्कूल निश्चित अवधि पर क्लास टेस्ट लेते हैं जिससे छात्र नियमित रूप से अपने पाठों को दुहराते रहें और बड़ी परीक्षाओं का सामना करने के लिए तैयार रहें।

बच्चे खेल के मैदान में लगाई जानेवाली पुकारों से परिचित हैं: अपने-अपने निशान पर पहुँच जाओ, तैयार हो जाओ, जाओ! इस फार्मूले को अध्ययन के क्षेत्र में भी लागू किया जा सकता है। स्कूल में नियमित रूप से उपस्थित रहना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह जीवन में अनुशासन-पालन का पहला कदम है। अध्यापक जो कुछ बोले या पढ़े, उसे ध्यान से सुनो। जरूरी समझो तो मुख्य बिन्दुओं को नोट कर लो। सन्देह हो तो उसी समय अध्यापक से पुनः स्पष्ट करने के लिए अनुरोध करो। घर लौटने पर, दूसरे दिन पढ़ाये जाने वाले संभावित पाठ को एक बार पढ़ लो, ताकि अध्यापक से तुम एक कदम आगे रह सको। यदि यह सब नियमित रूप से किया जाये तो क्लास टेस्ट हो या वार्षिक परीक्षा, तुम्हें किताबों को सरसरी नजर से उलट-पलट कर देखने मात्र की जरूरत रहेगी।

यह सलाह 'यह करो, यह न करो' की तरह नहीं दी जा रही है। लेकिन परीक्षा ज्वर को रोकने के लिए किसी और नुस्खे की तुम्हें जरूरत नहीं पड़ेगी, पड़ेगी क्या? संकेत शब्द, इसलिए, अनुशासन है; अन्य आवश्यक क्रियाएँ स्वतः उसी दिशा में अनुगमन करेंगी।

**सम्पादक : विश्वम**

# पाठकों का पन्ना

### डॉ.नियति चितालिया महिम से :

मैंने अपने बेटे के लिए तीन वर्षों तक **संस्कृत चन्दामामा** का शुल्क भेजा। उसने दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली और कॉलेज में उसे अब संस्कृत पढ़ना नहीं पड़ता। सभी ३६ अंक,जो मैंने मंगवाये थे, अब संस्कृत टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल की लायब्रेरी में अन्य रुचि रखनेवाले छात्रों के लिए रख दिये गये हैं। तब से मैं **अंग्रेजी चन्दामामा** पढ़ रही हूँ। इसे पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

### नीलमणि भाटिया, लेखक और चित्रकार, नई दिल्ली से :

**चन्दामामा** ने सफलतापूर्वक पुरातन के साथ अधुनातन के मेल जैसे कठिन काम को सन्तुलित बनाये रखा है। यह सचमुच प्रोत्साहनीय है कि **चन्दामामा** हमारे बच्चों के लिए एक सम्पूर्ण उपहार बन कर आया है। हमारी कामना है कि यह '**चन्दामामा**' आसमान में अपने प्रतिरूप के समान ही शाश्वत बना रहे!

### ज्योतिरंजन बिस्वाल, दुर्गापुर से :

आपने २००५ मई के अंक की सम्पादकीय टिप्पणी में ठीक ही कहा है कि अध्यापकों और पत्रकारों को भूले बिसरे महान देश भक्तों के लिए, जिन्होंने अपनी मातृभूमि से बिदेशी शासकों को खदेड़ने में अपने प्राण कुर्बान कर दिये, सम्मान की भावना उत्पन्न करने में मुख्य भूमिका निभानी चाहिये। यह दुख की बात है कि वर्तमान नन्हीं पीढ़ी को राष्ट्रपिता के आदर्शों में विश्वास नहीं रहा। **चन्दामामा** निरसन्देह अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका के माध्यम से देशभक्ति की ज्योति जलाने और बड़ों-बुजुर्गों के प्रति प्रेम जगाने में अपना योगदान दे रहा है।

### अरविन्द विजयाराघवन, टोरोण्टो, कनाडा से :

मैं चतुर्थ श्रेणी में पढ़ता हूँ। मैं पिछले दो सालों से **चन्दामामा** पढ़ता आ रहा हूँ। मैंने आप की सभी कहानियों से बहुत मूल्यवान नैतिक शिक्षाएँ ग्रहण की हैं। मैं भारतीय संस्कृति के बारे में भी बहुत सी चीजें सीखता हूँ, क्योंकि मैं भारत से हजारों मील दूर हूँ। पत्रिका में मेरे प्रिय भाग हैं कहानियाँ जो बच्चे लिखते हैं तथा उनकी हास्य रचनाएँ।

# बुद्धि - वैकल्य

गिरिव्रजपुर देश का शासक था, गिरिधर। वह हर वर्ष एक विशिष्ट व्यक्ति का सम्मान करता था। मंत्री सही समय पर देश के विशिष्ट व्यक्तियों की सूची तैयार करके राजा को समर्पित करते थे। उनमें से राजा को जो व्यक्ति पसंद आता था, उसका सम्मान करता था।

परंतु उस साल मंत्रियों द्वारा समर्पित सूची में से कोई भी व्यक्ति राजा को पसंद नहीं आया। तब मंत्रियों ने राजा से कहा, ''महाराज, इस साल ऐसे विशिष्ट व्यक्ति हमें नहीं मिले, जो आपको पसंद आयें। साधारण विद्वान और कलाकार कितने ही हैं; उनकी सूची बनाने की आज्ञा हो तो हम तुरंत बना देंगे।''

राजा ने उनके इस प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहा, ''कितने ही लोग विद्यावान गोचर होते हैं। परंतु मैं उन्हीं विद्यावानों को पसंद करता हूँ, जिनमें विशिष्ट गुण हों। ऐसे व्यक्ति बिरले ही होते हैं। ऐसा व्यक्ति अगर नहीं मिला तो किसी भी हालत में अयोग्य का सम्मान नहीं करूँगा।'' राजा ने अपना विचार स्पष्ट शब्दों में कह दिया।

यों पंद्रह दिन गुजर गये। राजा एक दिन परिवार सहित शिकार करने निकला। दुपहर तक बडे ही जोर-शोर से शिकार होता रहा। दुपहर तक परिवार के सदस्य थक गये और पिछड़ गये। राजा तेज़ी से जंगल से होता हुआ आगे बढ़ गया। वह भटक गया। राजा को यह जानने में देर नहीं लगी कि वह भटक गया है। पर इसपर वह चिंतित नहीं हुआ। प्यास लगने की वजह से पानी की तलाश में और आगे गया।

कहीं भी पानी देखने में नहीं आया, पर उसने एक जगह पर एक आश्रम देखा। प्यास बुझाने की आशा लेकर राजा आश्रम के अंदर गया। वहाँ का दृश्य देखकर वह सब कुछ भूल गया।

उस आश्रम में जितने भी थे, सबके सब किसी

लक्ष्मी गायत्री

न किसी प्रकार की विकलांगता से पीडित थे। परंतु किसी के मुखपर बिषाद छाया हुआ नहीं था। विकलांग होने पर भी किसी भी प्रकार की पीड़ा उनके चेहरों पर दिखायी नहीं दे रही थी। उनमें आत्मविश्वास भरा हुआ था। कुछ लोग टोकरियाँ बुन रहे थे तो कुछ लोग चटाइयाँ, तो कुछ और लोग कपड़े बुन रहे थे।

इस दृश्य को देखते हुए राजा अपनी प्यास की बात भूल गया। तब अंदर से एक सुंदर युवक वहाँ आया और राजा से आदरपूर्वक पूछा, ''आप कौन हैं? आपको क्या चाहिये?''

राजा ने यह नहीं बताया कि वह कौन है, पर प्यास बुझाने के लिए पानी मांगा। ठंडा पानी पीकर उसने प्यास बुझायी। तब युवक के दिखाये आसन पर आसीन होकर कुतूहल वश कितने ही प्रश्नों की बौछार कर दी। युवक ने मुस्कुराते हुए कहा, ''आपके सभी सवालों के जवाबों के रूप में एक कहानी सुनाता हूँ। सुनिये।'' फिर वह यों कहने लगा:

यहाँ से समीप ही रेपल्ले नामक एक कुग्राम है। पंडित नारायण शास्त्री वहाँ निवास करते हैं। कृष्णशास्त्री उनका एकलौता बेटा है। वह लड़का सुंदर और अनेक विद्याओं में पारंगत भी है। पर इस बडप्पन ने उसे घमंडी बना दिया। वह अपने को विशिष्ट व्यक्ति मानने लगा। उसके पिता को उसका यह स्वभाव बिलकुल अच्छा नहीं लगा। उसने उसे बहुत समझाया कि गर्व करना अनुचित है, विनय ही पंडित के पांडित्य का अलंकार है। समझाते-समझाते पिता तंग आ गया, पर कृष्ण शास्त्री के स्वभाव में थोड़ा भी परिवर्तन नहीं हुआ।

वहाँ के समीप बलभद्रपुर के जमींदार ने राज्योत्सव के संदर्भ में एक दिन नये कवियों की प्रतियोगिता की घोषणा की। इस घोषणा को सुनते ही कृष्ण शास्त्री ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि इस प्रतियोगिता में उसी की विजय होगी और उसका स्वागत-सत्कार होगा। इसी की कल्पना करते हुए वह घोड़ा गाडी में राजधानी निकल पड़ा।

घोडा गाडी थोडी ही दूर गयी कि कृष्ण शास्त्री ने देखा कि काले रंग का एक युवक चल नहीं पा रहा है और बहुत ही परेशान है। उस गाड़ी को देखते ही युवक ने रोकने का इशारा किया। कृष्ण शास्त्री कुछ कहे, इसके पहले ही गाडीवाले ने उस

युवक पर दया दिखाते हुए कहा, ''क्या पैर में चोट आयी?''

उस युवक ने मुस्कुराते हुए दोनों को देखकर कहा, ''पैर में काँटा चुभ गया। काँटे को तो निकाल दिया, पर दर्द हो रहा है। मुझे बलभद्रपुर जाना है। आप भी उसी ओर जा रहे हों तो क्या अपनी गाडी में मुझे भी ले जा सकेंगे?''

उसकी बातों को सुनकर कृष्ण शास्त्री ने उसे ध्यान से देखा। उसे लगा कि उसके मुखपर थोडी-बहुत विद्या की गंध है। गंभीर स्वर में उसने उसे गाड़ी में बैठने के लिए कहा।

युवक गाड़ी में बैठ गया। कृष्ण शास्त्री ने उसका नाम पूछा। युवक ने कहा, ''मैं थोड़ा बहरा हूँ। कृपया ज़ोर से बताइये।''

तिरस्कार भरी दृष्टि से उसे देखते हुए लगभग वह चिल्ला पड़ा, ''मैं पूछ रहा हूँ कि आपका क्या नाम है?''

युवक ने मुस्कुराते हुए कहा, ''जगन्नाथ मेरा नाम है। बलभद्रपुर के ज़मींदार के यहाँ जो प्रतियोगिता होनेवाली है, उसमें भाग लेने जा रहा हूँ।''

उसका यह जवाब सुनते ही कृष्ण शास्त्री के मुख पर लापरवाही दिखायी पडी।

गाडी बलभद्रपुर की सरहदों पर पहुँची। जगन्नाथ यह कहते हुए गाडी से उतर गया, ''यहाँ पास ही अपर धन्वंतरी के नाम से सुप्रसिद्ध नरसिंह नामक एक वैद्य रहते हैं। उनके हाथों पैर में दवा लगाकर आता हूँ।''
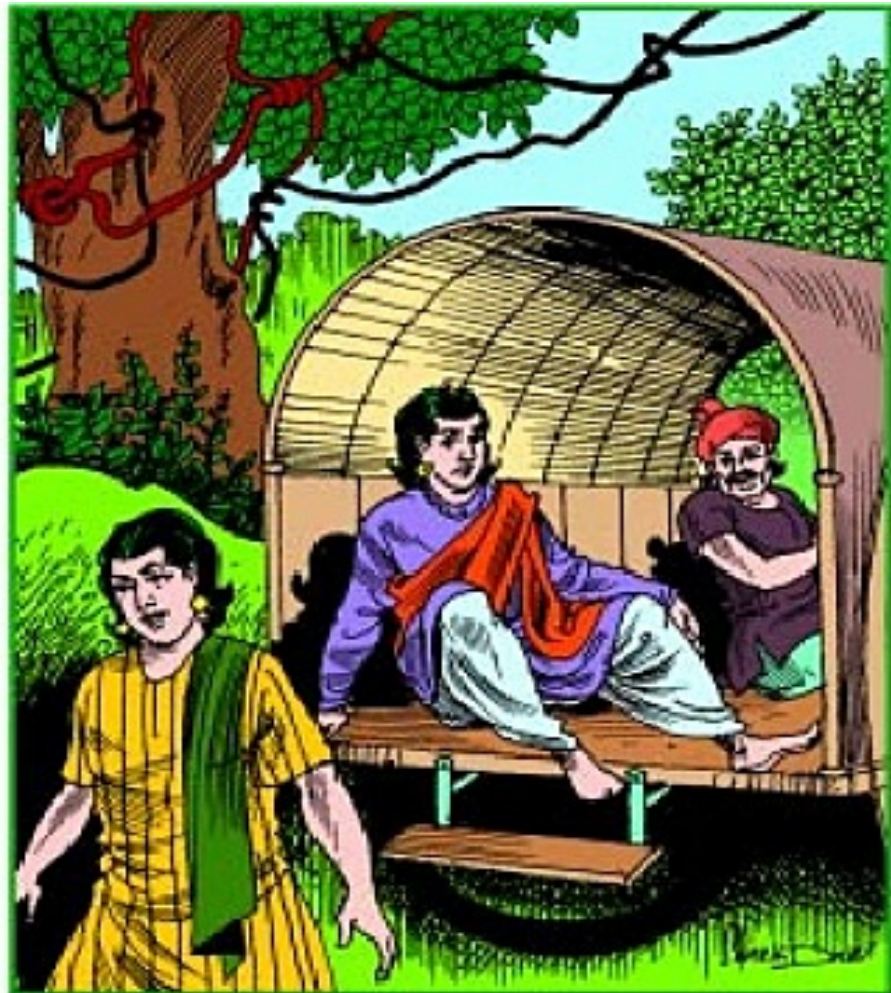
इसके दूसरे ही दिन कविता प्रतियोगिताएँ शुरू हो गयीं। कृष्ण शास्त्री पहले ही अपनी कविता सुनाकर जमींदार की प्रशंसा का पात्र बना। उसके बाद चार-पांच कवियों ने अपनी-अपनी कविताएँ सुनायीं। इतने में, जगन्नाथ एक अधेड को लेकर वहाँ आया।

उस ढलती उम्र के व्यक्ति को देखते ही ज़मींदार ने सादर उसका स्वागत किया और सभिकों को उसका परिचय देते हुए कहा कि ये ही वैद्य शिखामणि अपर धन्वंतरी नरसिंह हैं। तब बग़ल में खडे जगन्नाथ को दिखाते हुए नरसिंह ने ज़मींदार से कहा, ''इस युवक का नाम जगन्नाथ है। कल दोपहर को लंगडाता हुआ मेरे पास आया। पैर में काँटा चुभ गया, दर्द के मारे तड़प रहा था तो दवा लगायी। बिठाकर इधर-उधर की बातें

करता रहा तो तब जाकर मालूम हुआ कि यहाँ की कविता प्रतियोगिता में भाग लेने आया है। मैंने मज़ाक-मज़ाक में उससे कहा, ''दवा को लेकर कोई कविता सुनाओ तो सही।''

तब इसने तुरंत आशु कविता सुनायी, जिसका सारांश है: सब वैद्य दवाएँ देते हैं। करुणाद्र हृदय के वैद्य से दी गयी दवा अमृत से भी बढ़कर महिमावान होती है। इतना ही नहीं, वह भविष्य के रोगों का भी निवारण करती है। चूँकि आज का यह वैद्य ऐसा ही एक व्यक्ति-विशेष है, इसलिए मुझे दवा नहीं, अमृत प्राप्त हुआ है। और इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इस कविता को सुनने के बाद भला मैं जगन्नाथ को कैसे छोड़ सकता हूँ। साथ ले आया।

ज़मींदार ने खुशी से तालियाँ बजायीं और कहा, ''बहुत अच्छा। जगन्नाथ, अपनी कविता सुंगध से हमें मदहोश कर दीजिये।''

वैद्य नरसिंह ने तुरंत ज़मींदार से कहा, ''एक बीमारी के कारण जगन्नाथ बहरा हो गया। जल्दी ही मैं इसका इलाज करूँगा और ठीक कर दूँगा।''

जमींदार ने कहा, ''बहरा हुआ तो क्या हुआ? मनुष्य में शारीरिक लोप हों तो कोई बात नहीं। बस, उसकी बुद्धि ठीक होनी चाहिये।''

इसके बाद जगन्नाथ ने अपनी सुमधुर कविताओं से सभिकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन कविताओं को सुनने के बाद कृष्ण शास्त्री सहित सब कवियों को लगा कि उनकी कविताएँ नीरस व शुष्क हैं। कृष्ण शास्त्री को लगा कि जगन्नाथ ने कविता में ही नहीं बल्कि मानवता के गुणों में भी उसे पाठ सिखाया। उसका मन गर्व छोड़कर विनय गुण को सीखने के लिए धीरे-धीरे सन्नद्ध हुआ।

प्रतियोगिताओं की समाप्ति के बाद ज़मींदार ने जगन्नाथ का सत्कार किया। उसकी इच्छा के अनुसार उसे आस्थान कवि के पद पर भी नियुक्त किया।

विश्राम के समय कृष्ण शास्त्री, जगन्नाथ से मिला और दबे स्वर में कहा, ''यह सच है कि गाडी में यात्रा करते समय आपके प्रति लापरवाही बरती, मन ही मन आपको धिक्कारा। इसके लिए मुझे माफ़ कर दीजिये। मैंने सोचा नहीं था कि आप इतने महान कवि हैं।''

जगन्नाथ ने शांत स्वर में कहा, ''यह समझना

ग़लत है कि विकलांग व्यक्ति के महान होने पर ही उसका आदर करना चाहिये। ऐसा जो सोचते हैं, वे बुद्धि वैकल्य से पीडित लोगों में से हैं।''

जगन्नाथ की बातें कृष्ण शास्त्री को चाबुक की चोट जैसी लगीं। वह एक मिनट तक मौन रह गया और फिर बोला, ''आप जानते ही हैं कि विष भी कभी-कभी अमृत का काम करता है। आपकी कही बातें पहले मुझे विष जैसी लगीं, पर मुझे विश्वास है कि वे आगे जाकर अमृत समान काम करेंगी और जिस मानसिक रोग से मैं पीडित हूँ, उससे छुटकारा दिलायेंगी। मुझे अब अनुभव हो गया है कि शारीरिक विकलता से कहीं ज्यादा खतरनाक है बौद्धिक विकलता। जो एक मानसिक रोग है। मुझे जाने की अनुमति दीजिये।'' यों कहकर हाथ जोड़कर चला गया।

इसके बाद उसने अपने गांव की सरहदों पर एक आश्रम का निर्माण किया, उसमें विकलांगों को आश्रय दिया, उनमें जीवन के प्रति आशा जगायी और उन्हें किसी धंधे में योग्य बनने की शिक्षा देना आरम्भ किया।

युवक ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा से कहा, ''महाशय, मैं ही वह कृष्ण शास्त्री हूँ। इस आश्रम की स्थापना मैंने चार साल पहले की। जगन्नाथ ने इस आश्रम के बारे में जानकारी प्राप्त की और जब जी चाहा, यहाँ आते रहते हैं। वे ही मेरे गुरुदेव हैं। समय-समय पर वे ही हमें मार्गदर्शन देते रहते हैं। मैंने इस आश्रम की स्थापना उन्हीं की प्रेरणा से की है। मैंने उनके प्रति कभी लापरवाही बरती थी, उसी के प्रायश्चित के रूप में मैंने इसे स्थापित किया है। और उन्हीं को अपना गुरु माना है।'' राजा ने कृष्ण शास्त्री की बातें ध्यान से सुनीं। वह आनंद में डुबकियाँ लगाता हुआ बोला, ''मैं इस देश का राजा गिरिधर हूँ। मैं प्रत्येक वर्ष अपने राज्य के एक विशिष्ट व्यक्ति को सम्मानित करता हूँ। परन्तु इस वर्ष मेरे मंत्रियों को सम्मान योग्य कोई विशिष्ट व्यक्ति नहीं मिला। मैं इसलिए बहुत चिन्तित था। परंतु आज दो विशेष व्यक्ति मिले, जिनका सम्मान, इस साल ही नहीं, जीवन भर करता रहूँगा। और यह मेरा सौभाग्य होगा।''

# दुःख का कारण

कुमारस्वामी नामक एक भूस्वामी अनंतवर में रहा करता था। वह बड़ा ही दाता व धर्मात्मा था। अपने गाँव के ही नहीं, बल्कि अन्य गाँवों के ज़रूरतमंद लोगों की भी वह भरसक मदद करता था। दीन-दुखियों के लिए वह एक मसीहा था। दूर-दूर के गाँवों तक उसका नाम फैल गया था। नब्बे साल की उम्र में उसकी मृत्यु हो गयी। मृत्यु के पहले उसने अपनी संपत्ति का आधा भाग मंदिरों में संपन्न होनेवाले धर्म कार्यों और शेष आधा भाग रिश्तेदारों और मित्रों के नाम कर दिया।

ग्राम की उलटी दिशा में स्थित श्मशान में उसकी अंत्य क्रियायें हो रही थीं। कुमारस्वामी को चाहनेवाले, उनके प्रति श्रद्धा और भक्ति रखनेवाले तथा अन्य प्रशंसकों की वहाँ भारी भीड़ इकट्ठी थी। सभी उनकी दानशीलता की चर्चा कर रहे थे। अचानक अधेड़ उम्र का एक दुखी आदमी रोने लगा। उसकी पोशाक से लग रहा था कि वह ग़रीब है।

पास ही के गाँव का एक प्रमुख व्यक्ति उसके पास आया और पूछा, ''बुरा न मानना, आप इतने दुखी क्यों हैं? कुमारस्वामी क्या आपके रिश्तेदार हैं?''

ग़रीब ने 'नहीं' के अर्थ में सिर हिलाया। ''क्या आप उनके निकट के दोस्त हैं?'' प्रमुख व्यक्ति ने पूछा।

''दोनों में से कोई भी नहीं हूँ, इसीलिए इतना दुखी हूँ।'' ग़रीब ने कहा।

*- सुशील गुप्ता*
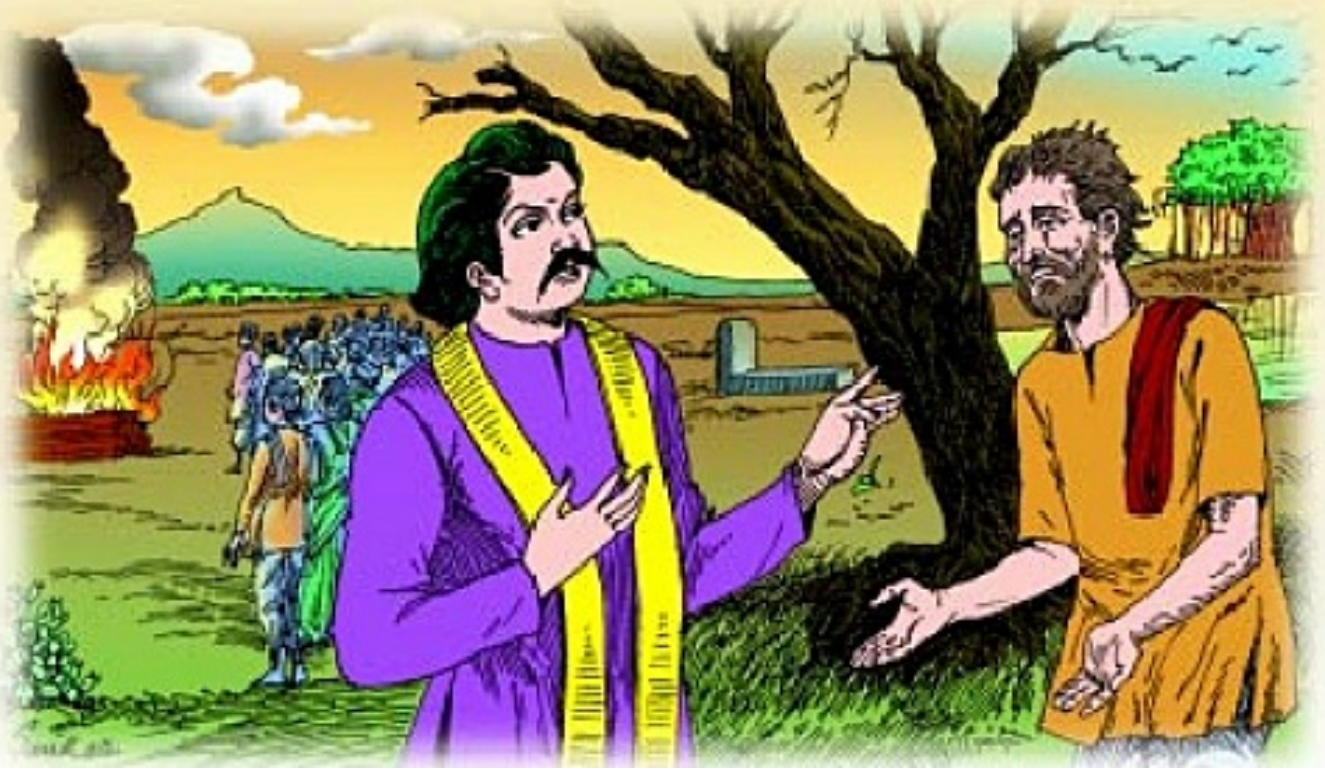
# भयंकर घाटी

## 7

*(ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक कालभैरव के समक्ष होम करने लगा। इस बीच ब्रह्मापुर के राजा का अंगरक्षक दो सैनिकों को लेकर पहाड़ के पास आया। वहाँ उन्हें केशव का वृद्ध पिता दिखाई दिया। सैनिकों ने उससे पहाड़ पर रास्ता दिखाने के लिए कहा। वह पहाड़ पर चढ़ने लगा। बाद में–)*

एक ऊँची जगह पर पत्थरों के पीछे से जयमल्लु पहाड़ के नीचे देख रहा था। उसने देखा कि चार आदमी पहाड़ पर आ रहे हैं। गुफ़ा के अन्दर मान्त्रिक कालभैरव का अलंकरण करके पास केशव को बिठाकर, मन्त्र पढ़कर हवन कर रहा था। यह कहकर कि केशव को कालभैरव उत्तेजित करने जा रहा है और उसको उस समय देखना खतरनाक है, उसने जयमल्लु को गुफ़ा से बाहर भेज दिया था। परन्तु जयमल्लु जब – जब मौका मिलता तो अन्दर झाँक कर देखता कि क्या हो रहा है।

जयमल्लु यह देखना चाहता था कि कालभैरव की प्रेरणा पर केशव क्या करने जा रहा है। वह जानता ही था कि मान्त्रिक केशव से भयंकर घाटी का मार्ग और वहाँ की धनराशि के बारे में जानना चाहता है। इसका भेद जानने के बाद मान्त्रिक केशव को मार भी सकता है... जयमल्लु को यह सन्देह था।

इसलिए उसे जानना था कि भयंकर घाटी का क्या मार्ग है। जब केशव कालभैरव के बश में होगा और जो कुछ वह तब कहेगा, बाद में उसे याद न रहेगा। इसलिए उसे सुनना होगा, और उसकी बातों को याद रखना होगा।

जयमल्ल जब यों सोच रहा था, तो उसने देखा कि उन चारों में से, जो पहाड़ पर चढ़ रहे थे, एक जंगल में भागा जा रहा है। और बाकी तीन मूर्तियों की तरह बिना हिले डुले खड़े हैं।

जयमल्ल ने पीछे मुड़कर देखा कि उन तीनों को किस चीज़ ने आश्चर्य में डाल दिया है। गुफ़ा में से काला धुआँ ताड़ के पेड़ की तरह आकाश में यकायक उठ रहा था।

जयमल्ल ने सोचा कि उस धुएँ को देखकर ही वे चकित हो उठे होंगे– जयमल्ल ने अनुमान किया। अब क्या किया जाये? ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक से क्या यह कहा जाये? कहूँ...या न कहूँ?

इस बीच राजा के अंगरक्षक द्वारा पहाड़ से भेजा हुआ सैनिक ब्रह्मापुर की ओर तेज़ी से भागा जा रहा था। सौभाग्य से उसको रास्ते में घोड़े पर एक बूढ़ा दिखाई दिया। सैनिक ने तलवार दिखाकर, डराकर उस बूढ़े से उसने घोड़ा ले लिया। उसपर स्वयं सवार हो वह नगर की ओर जल्दी जल्दी चला गया।

किले के मुख्य द्वार को पार करते ही सैनिक, "महाराज, महाराज..." चिल्लाने लगा। यह सुनते ही नव नियुक्त सेनापति महल से बाहर आया। "अबे, बन्द कर मुख। तुम महाराजा को ही पुकार रहे हो। क्या पागल हो गये हो? क्या बात है?"

सैनिक यह सुन घबरा उठा। "सेनापति जी, मुझे राजा के अंगरक्षक ने भेजा है। पहाड़ की एक गुफ़ा में से काला धुआँ आकाश की ओर निकल रहा है। गुफ़ा में एक मान्त्रिक है। उसी ने भूतपूर्व सेनापति को मारा था, एक बूढ़े ने बताया है। यह राजा को बताकर, कुछ और सैनिकों को बुलाकर लाने के लिए कहा है।"

"यह है कहने का तरीका? एक ही साँस में तुमने सब कह दिया। अब मुख बन्द करके मेरे साथ आओ।" कहता हुआ सेनापति सैनिक को साथ लेकर राजा के पास गया।

राजा और राजगुरु और सेनापति ने सब सुनकर सैनिक से पूछा, "यह बूढ़ा कौन है?"

''वह हमें जंगल में दिखाई दिया था। उसके हाथ में बड़ी तलवार भी थी। उसने बताया कि जंगल में वह कन्द मूल खाकर जिन्दगी बसर कर रहा है।'' सैनिक ने कहा।

''गुफ़ा में से धुआँ आने का कारण मान्त्रिक ही क्यों है? शत्रु सैनिक क्यों नहीं हो सकते?'' राजगुरु ने पूछा।

''मान्त्रिक ही है, उस बूढ़े ने यही बताया है। उसने मान्त्रिक को कई बार देखा है। वह उसकी गुफ़ा भी जानता है। किन्तु किसी शत्रु सैनिक को उसने कभी नहीं देखा,'' सैनिक ने कहा।

''क्या विचित्र जन्तुओं के बारे में वह बूढ़ा कुछ जानता है?'' राजा ने प्रश्न किया।

''वह विचित्र जन्तु मान्त्रिक का बनाया हुआ है, ऐसा उस बूढ़े का विश्वास है, पर उसने उस विचित्र जन्तु को नहीं देखा है, वह कह रहा था।'' सैनिक ने साफ-साफ कहा।

''गुरु जी, अब क्या किया जाये?'' राजा ने पूछा।

राजगुरु ने एक क्षण सोचकर कहा, ''इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उस पहाड़ की गुफ़ा में मान्त्रिक ही है। यदि शत्रु सैनिक होते तो वे इतने मूर्ख नहीं होते कि गुफ़ा में से धुआँ आने देते। यदि वे ऐसा करते तो उनका रहस्य औरों को मालूम हो जाता। इतने बेअक्ल नहीं होंगे दुश्मन। इसलिए मेरा अनुमान है कि वह मान्त्रिक बड़ा हवन कर रहा है, उस गुफ़ा में। नहीं तो इतना सारा धुआँ एक साथ बाहर नहीं आ सकता। हमें उससे सावधान रहना चाहिये। वह शत्रु सैनिकों से भी अधिक खतरनाक हो सकता है। वह आप के विरुद्ध मंत्र का प्रयोग कर राज्य में अशान्ति फैला सकता है। अथवा राज्य को भी हड़प सकता है। इसलिए हमें उसे जीते जी पकड़ना होगा।''

''वह तो दुष्ट मान्त्रिक है न? क्या हम चुपचाप जाकर उसे पकड़ सकते हैं?'' राजा ने निरुत्साहित होकर पूछा।

''वह सब मुझपर छोड़ दीजिये। मैं मन्त्रशास्त्र जानता हूँ, पर अभी मैंने इसका उपयोग नहीं किया है। उस दुष्ट को कैसे वश में करना है, यह जानता हूँ।'' कहकर राजगुरु ने सेनापति की ओर मुड़कर कहा, ''सेनापति, दस अच्छे सैनिकों को फ़ौरन जाने के लिए तैयार रखिये।''

जयमल्ल झट मुड़कर गुफ़ा के पास गया। अन्दर ब्राह्मदण्डी की आवाज़,जो घंटे की तरह गूँज रही थी, यकायक रुक गई। तुरंत केशव की आवाज़ सुनाई दी। वह कह रहा था, ''विंध्या के जंगलों के पार एक घाटी है। वही भयंकर घाटी है। उस घाटी में एक जगह पीपल का ऊँचा पेड़ है। उसके नीचे एक बाम्बी है-'' ब्राह्मदण्डी ख़ुशी में जोर से न मालूम क्यों हँसने लगा। ''कालभैरव, बताओ, बताओ।'' उसने केशव के कन्धे पर मन्त्रदण्ड रखा।

''वह वृक्ष पूर्णिमा के दिन फल फूलों से भर उठता है। शेरों के राजा को मारकर, उसका चर्म निकालकर, उसे...'' केशव कहता- कहता सहसा रुक गया और हाथ से अपना गला पकड़कर काँपता -काँपता, आगे पीछे झूमने-सा लगा।

''अरे, यह क्या? लगता है, किसी ने काल भैरव को रोक दिया है। ऐसा कोई मान्त्रिक ही कर सकता है। कौन हो सकता है वह?'' ब्राह्मदण्डी को सन्देह हुआ।

केशव के हाव- भाव देखकर ब्राह्मदण्डी जोर से गरजा- ''कौन है वह? मुझपर ही कोई मन्त्र का उपयोग कर रहा है। अरे ! उसने कालभैरव का मुख ही बन्द कर दिया है !'' उसने हुँकार किया। जयमल्ल गुफ़ा के द्वार से बाहर की ओर भागा और उसने पहाड़ के नीचे की ओर देखा। उसने देखा कि जो घोड़ों पर सवार होकर आये थे, उनमें से एक नीचे उतरकर, कमंडल में से पानी निकालकर पत्थरों पर छिड़क रहा है। वह राजगुरु था।

अभी दस मिनट भी न हुए थे कि राजगुरु, सेनापति और सैनिक घोड़ा पर सवार होकर नगर छोड़कर जंगल के रास्ते पहाड़ की तरफ़ निकल कर जाने लगे। अंगरक्षक के साथ जो सैनिक गया था, वह आगे आगे उनको रास्ता दिखा रहा था और पहाड़ पर जो कारनामे किये थे, सुना रहा था।

जयमल्ल ने, जो गुफ़ा के पास पहरा दे रहा था, राजगुरु और सैनिकों को देखा। वह जान गया कि जो सैनिक कुछ देर पहले भाग गया था, वही इन सब को साथ लाया है। गुफ़ा से बाहर जो धुआँ उठ रहा था, उसी की वजह से मान्त्रिक के बारे में वे जान सके। वह भयंकर घाटी का मार्ग जानने के प्रयत्न में इतना संलग्न हो गया था कि भूल ही गया कि उसके गले में रस्सी पड़ रही है।

जयमल्ल को डर लगा कि ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक के साथ वह और केशव भी पकड़े जायेंगे। उसने यह भी अनुमान किया कि उन लोगों में भी कोई मन्त्रवेता है। यदि ऐसा है तो उनके सामने हमारे मांत्रिक गुरु की शक्ति कम पड़ जायेगी, क्योंकि अब राजा के पास सैन्य बल और मन्त्र बल दोनों हैं।

''गुरु गुरु...'' जयमल्ल गुफ़ा की ओर भागा। ''ब्रह्मापुर के सैनिक पहाड़ पर आ रहे हैं।'' उसने मान्त्रिक से कहा।

मान्त्रिक ने दाँत कटकटाये। ''यदि वे सैनिक हैं तो हमें क्या भय है, शिष्य! उनके साथ कोई तुच्छ मान्त्रिक भी मालूम होता है। उस तुच्छ मांत्रिक को मैं कालभैरव पर बलि चढ़ाये बिना नहीं छोड़ूँगा। उसने उसके उपासक का ही मुख बन्द कर दिया।''

''उस तुच्छ मान्त्रिक के मुख बन्द करने से पहले क्या कालभैरव ने सब कुछ बता दिया है गुरु?'' जयमल्ल ने पूछा।

तुरंत ब्राह्मदण्डी की भौहें चढ़ गईं। उसने सन्देह करते हुए जयमल्ल को देखकर पूछा, ''क्या तुम छिप कर जो कुछ गुफ़ा में हो रहा था, देख रहे थे?''

''यह क्या गुरु जी ! आपने तो मुझे बाहर रहने के लिए कहा था न? क्योंकि मैं आपकी आज्ञा का पालन कर रहा था, इसलिए मैं ब्रह्मापुर के उन सैनिकों को देख सका। यदि गुफ़ा में ही देखता रहता तो पहाड़ पर चढ़नेवाले इन सैनिकों को कैसे देख पाता!'' जयमल्ल ने कहा।

तब तक केशव की हालत ऐसी थी, जैसे बेहोश हो। फिर वह यकायक उठा। उसने चारों ओर इस तरह देखा मानों वह किसी नई जगह पर आ गया हो और कुछ याद करते हुए कहा, ''मैं कहाँ हूँ? मैं कौन हूँ?'' मान्त्रिक उसके पास गया। उसका कन्धा सहलाते हुए उसने कहा, ''तुम केशव हो। तुम महा मान्त्रिक ब्राह्मदण्डी की गुफ़ा में हो। समझे? वह देखो उपासकों का कल्पद्रुम...उन्मत्त भैरव।''

केशव ने गुफा में चारों ओर नजर दौड़ाई। फिर आश्चर्य से देखते हुए सब कुछ पहचानने की कोशिश करने लगा। धीरे-धीरे उसकी पुरानी स्मृति वापस आने लगी। उसने ब्राह्मदण्डी और जयमल्ल को पहचान लिया और फिर कालभैरव की मूर्ति देखकर कहा, ''कालभैरव की आँखों की कान्ति कुछ कम हो गई-सी मालूम होती है।'' उसने पीछे मुड़कर जयमल्ल से पूछा, ''सब विचित्र-सा लगता है। क्या हुआ जयमल्ल।''

जयमल्ल कुछ कहने जा रहा था कि मान्त्रिक ने उसे रोककर कहा, ''कुछ नहीं केशव, मैं जरा असावधान था। किसी तुच्छ मान्त्रिक ने मुझ पर वार किया है। तुम न डरो। मैं उसे कालभैरव को बलि देकर रहूँगा। वह हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा।''

''गुरु, अब यहाँ समय बिताने से काम न चलेगा। शत्रु हमें खोजते पहाड़ पर चले आ रहे हैं। कहीं भाग निकलें। मार्ग दिखाइये।'' जयमल्ल ने कहा।

''भाग जायें? यह नहीं हो सकता। यह महा मान्त्रिक ब्राह्मदण्डी शत्रुओं से डरे और भाग जाये? क्या कह रहे हो, शिष्य! तुम मेरी मंत्र शक्ति को नहीं जानते! मुझे न राजा के सैनिकों से भय है और न उस तुच्छ मंत्रवेत्ता से जो उनके साथ है। कालभैरव मेरी रक्षा करेंगे...मैं यहीं से उस मान्त्रिक को मार दूँगा, जिसने मुझपर हमला किया है। उसको सबक सिखाऊँगा। तुम दोनों जाकर कहीं दूर छिप जाओ।'' यह कहता हुआ ब्राह्मदण्डी, कालभैरव की मूर्ति की ओर चला।

केशव ने अपने धनुष-बाण ले लिये। उसके बाद जयमल्ल और वह गुफ़ा से बाहर निकलकर पत्थरों के पीछे छिपते-छिपते हाथियों के झरने की ओर भागने लगे। *क्रमशः*
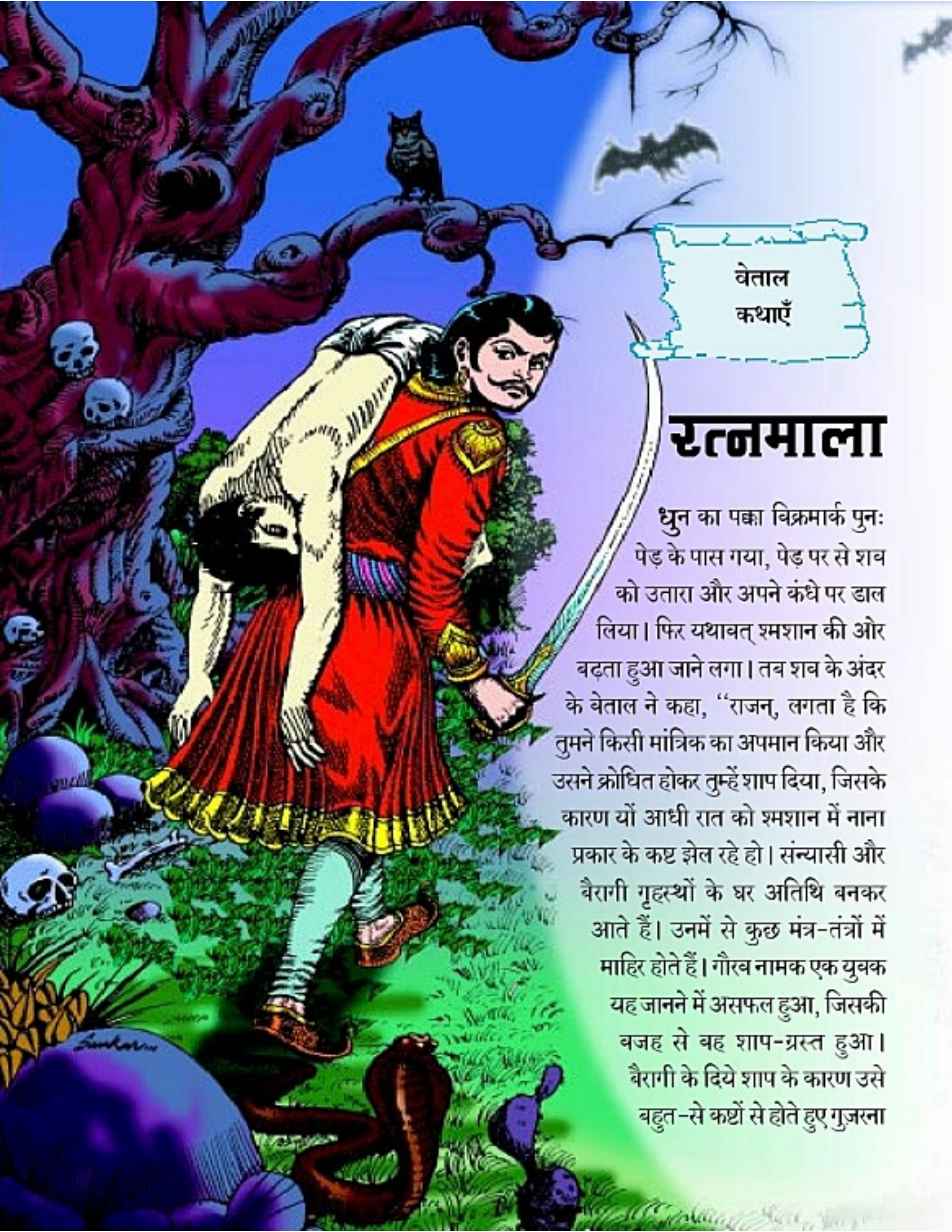
बेताल कथाएँ

# रत्नमाला

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, लगता है कि तुमने किसी मांत्रिक का अपमान किया और उसने क्रोधित होकर तुम्हें शाप दिया, जिसके कारण यों आधी रात को श्मशान में नाना प्रकार के कष्ट झेल रहे हो। संन्यासी और बैरागी गृहस्थों के घर अतिथि बनकर आते हैं। उनमें से कुछ मंत्र-तंत्रों में माहिर होते हैं। गौरव नामक एक युवक यह जानने में असफल हुआ, जिसकी वजह से वह शाप-ग्रस्त हुआ। बैरागी के दिये शाप के कारण उसे बहुत-से कष्टों से होते हुए गुज़रना

पड़ा। थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।'' फिर बेताल ने उसकी कहानी यों सुनायी:

श्रीनिवास सिरिपुर में प्रमुख व्यापारी था। उसकी पत्नी सुजाता, सुशील व सुगुण संपन्न थी। दो बेटों में से बड़ा बेटा भैरव शांत स्वभाव का था और दूसरा बेटा गौरव अशिष्ट था।

एक दिन एक बैरागी उनके घर आया और भोजन परोसने कहा। सुजाता ने उसे स्वादिष्ट भोजन खिलाया। भैरव ने विनयपूर्वक उसकी सेवा की। परंतु गौरव ने उसकी कोई परवाह नहीं की। उल्टे यह भी कहा कि एक भिखारी की इतनी इज़्ज़त क्यों की जाए।

बैरागी नाराज़ हो उठा। कहा, ''अन्न माँगनेवाले पर इतना क्रोध मत उतारो। हो सकता है, भविष्य में तुम्हें भी भीख माँगनी पड़े।''

''हमारे घर में खाना खाकर मुझी को शाप दे रहे हो। तुम जैसे दुष्टों की मैं परवाह नहीं करता।'' कहकर गौरव वहाँ से चला गया।

श्रीनिवास, सुजाता, भैरव बैरागी की बातों से डर गये और गौरव की तरफ़ से क्षमा-भिक्षा माँगी। बैरागी हँसता हुआ बोला, ''कहो, तुम लोगों को क्या चाहिये?''

''हमारी कोई इच्छा नहीं है। गौरव का शरारतीपन कम हो जाए, इसका कोई उपाय बताइये।'' सुजाता ने कहा।

बैरागी ने उनसे कहा, ''आश्चर्य की बात है कि गौरव जैसा दुष्ट आपके घर में जन्मा। उसे अपने रास्ते पर जाने दीजिये। उसकी चिंता मत कीजिये। कहिये, आप लोगों को क्या चाहिये?''

''हमारी एकमात्र इच्छा यही है कि गौरव का भविष्य अच्छा हो।'' तीनों ने कहा।

बैरागी ने कहा, ''उसकी वक्र बुद्धि को परिवर्तित करने की शक्ति मुझमें नहीं है।'' फिर, लंबी सांस खींचते हुए उसने चमकती हुई एक रत्नमाला कुरते से निकाली और उसे श्रीनिवास को देते हुए कहा, ''यह माला महिमान्वित है। इसे पूजा मंदिर में सुरक्षित रखिये और इसकी पूजा करते रहिये। यह आपकी रक्षा करेगी। परंतु इसे अयोग्य धारण करेंगे अथवा किसी को दान में देंगे तो इसका कोई प्रयोजन नहीं होगा।'' गौरव के सुधर जाने की उम्मीद लेकर श्रीनिवास ने उस माला को बैरागी के समक्ष ही पूजा मंदिर में रखा।

कुछ समय बीत गया। एक दिन श्रीनिवास

ने दोनों बेटों को बुलाकर कहा, ''मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ। मेरा तन, मन विश्राम चाहता है। आगे से भैरव व्यापार संभालेगा। गौरव, भाई को आवश्यक सहायता पहुँचाता रहेगा।''

पिता का यह फैसला गौरव को बिलकुल पसंद नहीं आया। उसे लगा कि पिता ने उसके साथ अन्याय किया और बड़े भाई के साथ पक्षपात। उसने साफ़-साफ़ कह दिया कि घर में नहीं रहूँगा। थोड़ा धन देने पर स्वयं व्यापार करूँगा। कोई दूसरा चारा नहीं था। इसीलिए श्रीनिवास ने उसे थोडी धन राशि दी। धन लेकर गौरव घर से चला गया। उसने अनेक व्यापार किये, पर किसी भी व्यापार से उसे फ़ायदा नहीं हुआ।

गौरव घर लौटा। पिता से कहा, ''व्यापार में नुक़सान हो गया। अब एक फूटी कौडी भी नहीं बची। बड़ा भाई व्यापार में खरा उतरा है तो यह उसका बड़प्पन नहीं है। मैं व्यापार में नाकामयाब हुआ हूँ, यह मेरी अक्षमता भी नहीं है। यह पूजा मंदिर की रत्नमाला की महिमा है। वह रत्नमाला मुझे दे दीजिये। जब तक ठीक नहीं हो जाऊँगा, उसे अपने पास रखूँगा।''

''रत्नमाला को पूजा मंदिर से निकालने पर अनिष्ट होगा। हमने तुमसे बताया भी था कि बैरागी ने क्या कहा था, फिर भी उस माला के लिए तुम जिद्द कर रहे हो। अब साफ हो गया कि तुम्हारी बुद्धि टेढ़ी है,'' श्रीनिवास ने कहा।

पिता की बातों पर गौरव क्रोधित हो उठा। उस रात को जब सब सो गये, उसने थोड़ी-सी

रक़म और रत्नमाला निकाली। फिर सबेरे तक दूसरा गाँव पहुँचा। वह बड़ा गाँव था। आसपास के चार-पाँच गाँवों के लिए वह केंद्र स्थल था।

गौरव को लगा कि यह गाँव वस्त्र व्यापार के लिए अनुकूल होगा। उसने एक घर किराये पर लिया। पास के नगर में जाकर भारी मात्रा में कपड़े खरीदे। एक बैलगाड़ी में लादकर जब वह गाँव लौट रहा था, तब अकस्मात बिजली कड़कने लगी और ज़ोर की बारिश होने लगी।

मार्ग मध्य में तीन लुटेरों ने गाड़ी रोकी, गाड़ीवालों और गौरव को तलवारें दिखाकर डराया-धमकाया। फिर गाड़ी को दूसरे रास्ते में ले गये। वहाँ पूरा माल लूट लिया। अपने दुर्भाग्य पर दुखी होता हुआ जब गौरव घर के पास आया, तब उसने देखा कि उसके घर पर बिजली गिरी

और देखते-देखते घर जल गया।

ये जो दो दुर्घटनाएँ घटीं, इनसे गौरव को लगा कि उसके पास जो रत्नमाला है, वह विषैले नाग से भी भयंकर है। उससे छुटकारा पाने के उपाय सोचने लगा तो जलते हुए घर के सामने वह बैरागी दिखायी पड़ा। बैरागी ने कहा, ''अरे पापी, तुम्हारा दुर्व्यवहार ही तुम्हारे लिए शाप बन गया है। आज से गाँवों में घूमते रहो और भीख माँगकर अपना पेट भरते रहो। जो कन्या बिना स्वार्थ के हृदयपूर्वक तुमसे शादी करने का वचन देगी, उसे यह रत्नमाला देने पर तुम्हें इससे मुक्ति मिलेगी।''

तब से लेकर गौरव गाँवों में भिक्षाटन करता रहा। कोई सुंदर लड़की दिखायी पड़े तो उसे अपनी कहानी सुनाता और उससे शादी करने पर रत्नमाला देने का वचन देता। रत्नमाला पाने की इच्छा से दो-तीन लड़कियों ने भिखारी होते हुए भी उससे शादी करने की इच्छा प्रकट की। उसने वह रत्नमाला उन्हें दी भी, पर वह माला तुरंत उसी के पास लौट आयी।

यों घूमता-फिरता हुआ वह मार्कापुर पहुँचा। वहाँ देव नामक एक व्यक्ति था। उसके माँ-बाप उसके बचपन में ही मर चुके थे। मेहनत करके उसने बहन शिवानी को पाल-पोसकर बड़ा किया। वे एक-दूसरे को बहुत चाहते थे।

देव को उसी गाँव की देवकी नामक सुंदर लड़की से प्रेम था। देवकी चार-पाँच घरों में नौकरानी का काम करती थी। उसका अपना कोई नहीं था। किसी धनी से शादी करूँ, सुखी जीवन बिताऊँ, यह उसकी इच्छा थी। देव को जब मालूम हुआ तब उसे उससे अपने प्रेम के बारे में बताने में संकोच हुआ। शिवानी भाई की इच्छा जानती थी। वह देवकी से मिली और कहा, ''मेरा भाई तुमसे प्रेम करता है। मैं तुम्हें भाभी मानती हूँ। मेरे भाई से शादी कर लो।''

''देवियाँ रत्नमाला पहनती हैं। मुझे एक रत्नमाला लाकर देना। तब तुम्हारे भाई से शादी करूँगी।'' देवकी ने फ़ौरन कहा।

''रत्नमाला पाने के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ। परंतु उसे खरीदने के लिए धन की ज़रूरत है न,'' दर्द भरे स्वर में शिवानी ने कहा।

ठीक उसी समय पर भिक्षा माँगने गौरव वहाँ आया। उसने उन दोनों की बातें सुन लीं। शिवानी को ध्यान से देखते हुए उसने कहा, ''बिना धन

माँगे तुम्हें रत्नमाला दूँगा तो क्या मुझसे शादी करोगी?'' कहते हुए उसने रत्नमाला निकाली।

रत्नमाला को देखते ही शिवानी की आँखें चमक उठीं। सोचे-विचारे बिना उसने 'हाँ' कह दिया। गौरव ने वह रत्नमाला शिवानी के हाथ में रख दी तो वह वहीं रह गयी। शिवानी ने उसे देवकी के गले में पहना दी।

गौरव ने बहुत ही खुश होते हुए कहा, ''अच्छा हुआ, मैं बैरागी के शाप से मुक्त हो गया। उनके कहे अनुसार वह लड़की मुझे मिल गयी है, जो हृदयपूर्वक मुझसे शादी करेगी।''

देव उस समय अपनी बहन को ढूँढ़ता हुआ वहाँ आया तब उसे गौरव के द्वारा मालूम हुआ कि वह अच्छे घर का है। उसकी जो यह दुस्थिति हुई है, उसका कारण बैरागी का शाप मात्र है। फिर इसके दूसरे ही दिन गौरव-शिवानी और देव-देवकी के विवाह संपन्न हुए।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, ''राजन्, बैरागी ने श्रीनिवास से कहा था कि इस रत्नमाला से तुम्हारे परिवार का भला होगा। पर हुआ इसके विरुद्ध। उसी परिवार का गौरव शापग्रस्त होकर भिखारी बना और दर-दर भटकता रहा। यह तो भलाई नहीं कही जा सकती है न? उस माला से सचमुच लाभ पहुँचा देव को। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''बैरागी ने गौरव को जो शाप दिया, उसमें विचित्रता यह है कि उस रत्नमाला से गौरव को ही लाभ नहीं हुआ बल्कि दूसरों को भी लाभ हुआ। गौरव के नाना प्रकार के कष्टों से गुज़रने के बाद, श्रीनिवास के परिवार की प्रत्याशा के अनुसार वह सही मार्ग पर आया। शिवानी का पति बना, यह शिवानी के लिए अच्छा हुआ। देव को मिली वह लड़की, जिससे उसने प्रेम किया था। इसीलिए कह सकते हैं कि बैरागी के शाप से सबका भला हुआ।''

राजा के मौन-भंग में सफल, वेताल शव समेत ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

***(आधार ''वसुंधरा'' की रचना।)***

# पादुकाओं की शोभायात्रा

प्रत्येक वर्ष जून-जुलाई में महाराष्ट्र में प्रसिद्ध पालकी यात्रा आयोजित होती है। पालकियों के साथ-साथ सामान्य तौर पर लगभग पाँच से दस लाख के बीच यात्री चलते हैं जो अपने गन्तव्य पर पहुँचने से पूर्व दो भिन्न-भिन्न रास्तों से पुणे आते हैं। दो पालकियों में संत तुकाराम और सन्त ज्ञानेश्वर की पादुकाएँ रखी जाती हैं जो चौथी और पाँचवीं शताब्दी के बीच हुए थे।

यात्रा में २८ दिन लग जाते हैं और भक्तों को पुणे और पंढरपुर के बीच लगभग २०० कि.मी. की यात्रा नंगे पाँव करनी पड़ती है। यात्रियों का अनुशासन-पालन और उनकी एकाग्रचित्त भक्ति को देखे बिना सहसा विश्वास नहीं होता।

पिछले ३० जून को लगभग छः लाख भक्तजन देहू और अलन्दी, नगर के दो मार्गों से पुणे पहुँचे। देहू मार्ग से सन्त तुकाराम की और अलन्दी मार्ग से सन्त ज्ञानेश्वर की पादुकाएँ आईं। दूसरे दिन वे विट्ठल - जो भगवान विष्णु का दूसरा नाम है, के मन्दिर में पूजा के लिए पंठपुर के लिए चल पड़े। वे वहाँ २९ जुलाई को पहुँचे। भक्तजनों को प्रायः यात्रा में थकान महसूस नहीं होती, जिसे वे एक उल्लासपूर्ण उत्सव में बदल देते हैं।

# समाचार झलक

## धोती में स्पायडरमैन

बच्चों का प्रिय कॉमिक पात्र स्पायडरमैन अब भारतीय समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में धोती पहन कर आयेगा। भारतीय अवतार में उसका नया नाम होगा पवित्र प्रभाकर। पहले किस्त में यह दिखाया गया है कि वह मुम्बई की गलियों में गुण्डों का पीछा करता है। वह स्पायडरमैन की शक्ति एक योगी से प्राप्त करता है जो उसे उसकी अपनी जाल बुनने की प्रतिभा को दुष्टों को खत्म करने में प्रयोग करने के लिए आशीर्वाद देता है। पाठकों को पवित्र प्रभाकर में पीटर पार्कर की, मीरा जैन (प्रभाकर की दोस्त) में मेरी जेन की और अंकल बेन में अंकल भीम की झलक मिल पायेगी। स्पायडरमैन के भारतीय रूपान्तर के लेखक हैं- जीवा के.कांग।

## टी.शर्ट्स पर तिरुक्कुरल

कोयम्बतूर के निकट तिरुप्पूर बनियान, जांधिया, जुराब, दस्ताना तथा टी.शर्ट जैसे बुने हुए पहनावों के लिए प्रसिद्ध है। उनमें से अधिकांश विदेशों में खूब बिकते हैं। एक कम्पनी ने टी.शर्ट का एक नमूना इटली भेजा। उस पर तमिल में तिरुक्कुरल के दोहे छपे थे। इटली के खरीददार जानना चाहते थे कि यह क्या है। जब उन्हें उन दो हजार साल पुराने दोहों के अर्थ और महत्व बताये गये तो आदेश पर आदेश आने लगे। कम्पनी ने उन टी.शर्टों का एक ब्रैण्ड नाम रखा है- टीम स्प्रिट। इटली के खरीददारों ने अब सलाह दी है कि तमिल लिपि के साथ-साथ अंग्रेजी अनुवाद भी दिये जायें। कम्पनी पहले से ही टी.शर्ट्स पर भारतीयार तथा भारतीदासन के उद्धरण छापने पर विचार कर रही है। इसके बाद हमारे आध्यात्मिक गुरुओं के चित्रों और उनकी वाणी तथा योगासनों की भी बारी आयेगी। सचमुच, भारत की विदेशों में बड़ी मांग है !

हिमाचल प्रदेश की एक लोककथा

# कब आयेगा वसन्त?

**चन्द्र**ताल झील, लाहौल को स्पीति नदी से मिलानेवाली घाटी कुंज़म ला के बगल में, एक तराई में थी। सर्दियों में झील का ऊपर का पानी जम जाता था। गर्मियों में घनी हरी घास से भरे पर्वत के ढलान सुन्दर दिखाई पड़ते थे। चन्द्रताल के जल में बर्फीली चोटियों के प्रतिबिम्ब का दृश्य बड़ा मनोहारी लगता था। आसपास के गाँवों के गड़ेरिये अपने भेड़ों को लेकर वहाँ आया करते थे। भेड़ वहाँ के चरागाहों को छोड़ कर जाना नहीं चाहते थे, इसलिए अधिकतर गड़ेरिये जाड़ा आने तक वहीं रुक जाते थे।

नीमा चन्द्रताल के सबसे निकटवाले गाँव हँसे का निवासी था। वह अपने भाई और उसकी पत्नी डोल्मा के साथ रहता था। डोल्मा लड़ाकी औरत थी। सर्दियों में, जब नीमा घर पर होता, डोल्मा उससे घर के कई काम करवाया करती थी, जैसे लकड़ी काटना, पानी लाना आदि। वह बोलने में तेज-तर्रार थी और उसे सुबह से शाम तक परेशान किया करती थी। डोल्मा उसे अक्सर कहती, ''तुम एक बीवी ले आओ जो तुम्हें और मुझे मदद करे। फिर तुम जो चाहोगे, हर चीज मिल जायेगी।''

नीमा हमेशा गर्मियों के आने का इन्तज़ार करता रहता, क्योंकि, तभी वह पर्वत के हरे-भरे ढलानों पर भेड़ों को चराने के लिए ले जाता था। वह डोल्मा के दिये खाने-पीने का सामान अपने साथ ले जाता। भेड़ों को पहाड़ों पर चढ़ने में बड़ा मजा आता था। हरी घास पर पाँव पड़ते ही वे उछलने-कूदने लग जाते थे। नीमा उन्हें आजाद छोड़ देता और खुद किसी एक गुफा को साफ-

सुथरा कर खाने-पीने का सामान रखने तथा भेड़ों के लिए बाड़े बनाने में व्यस्त हो जाता था। यह सब कर लेने के बाद गुफा के सामने सूखी पत्तियों के बिछौने पर लेट जाता और मुलकिला पहाड़ की चोटियों पर मंडराते बादलों को निहारने लगता। शाम को वह भेड़ों को हाँक कर बाड़े के अन्दर ले आता। फिर वह खाना खाता और बहुचर्चित चन्द्रताल की परी के बारे में सपने देखता हुआ सो जाता।

एक बार, जब पूर्णिमा की रात थी, नीमा झील के निकट अंगीठी के बगल में बैठा था। उसे नींद नहीं आ रही थी और वह विचार-शून्य होकर चन्द्रताल के स्वच्छ जल में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब पर मुग्ध हो रहा था। तभी वह किसी स्त्री का कंठ-स्वर सुन कर चौंक गया। क्या यह उसकी कल्पना मात्र थी, उसे सन्देह हुआ, लेकिन उसे पूरा विश्वास था कि, उसने किसी स्त्री का स्वर सुना है। उसने पीछे मुड़ कर देखा। कुछ दूरी पर झील के किनारे सचमुच एक सुन्दर युवती महीन धवल वस्त्र में लिपटी खड़ी मुस्कुरा रही थी।

वह धीरे-धीरे चलती हुई नीमा के पास आई और मधुर मन्द स्वर में बोली, "मैं चन्द्रताल झील की परी हूँ। मैं तुम्हें बहुत दिनों से देख रही हूँ और तुमसे दोस्ती करना चाह रही हूँ। तुम्हारा नाम क्या है? तुम एक खूबसूरत लड़के हो।"

"मैं हँसे गाँव का रहनेवाला नीमा हूँ।" उसने अपना परिचय दिया। "मैं यहाँ गर्मियों में अपने भेड़ों के साथ आता हूँ। मैंने चन्द्रताल-परी के

बारे में बहुत कुछ सुना है, हालांकि किसी ने उसे, लगता है, देखा नहीं है।" वह एक लम्बी मुस्कान के साथ बोला।

"नीमा, जब भी तुम यहाँ आते हो, वही मेरे लिए बसंत है और जब चले जाते हो, तभी वह मेरे लिए शीतकाल है।" परी ने प्यार से कहा। "तुम्हें सोये हुए देखकर मुझे हमेशा अच्छा लगता था। मैं सिर्फ रात में ही झील से बाहर आ सकती हूँ और आज तुम्हें जगा हुआ देख बड़ी हिम्मत करके तुम्हारे पास आई हूँ। क्या मेरे साथ चलोगे, नीमा?" परी ने बड़े स्नेह के साथ कहा।

नीमा वहाँ अवाक् खड़ा रहा। परी निःसंकोच उसका हाथ पकड़ कर झील की ओर बढ़ने लगी।

वाली परी अवश्य ही परियों की रानी होगी। अन्य परियों ने उसे रेशमी वस्त्र पहनाया और इत्र छिड़का। फिर वे रानी परी और नीमा के लिए सोने के थालों में स्वादिष्ट फल और सोने के प्यालों में मीठे पेय ले आये। उन्होंने रानी परी के हाथ में तितली के परों से बना एक पंखा दे दिया। वह नीमा को पंखा झलने लगी, जिससे नीमा को शीघ्र ही नींद आ गई। भोर होते ही वह उठा और रानी परी उसे झील के किनारे छोड़ गई और रात को पुनः मिलने का वादा किया। नीमा जल्दी से बाड़े की ओर गया और अपने भेड़ों के बाड़े का दरवाजा खोल दिया।

रानी परी हर रात नीमा को अपने महल में ले जाती और दूसरे दिन सवेरे छोड़ जाती। गर्मियों के दिन जैसे-जैसे बीतने लगे, वह चिन्तित रहने लगा कि सर्दियों के आने पर क्या होगा।

झील में कदम रखते ही आश्चर्य कि नीमा भी परी के साथ-साथ पानी की सतह पर चलने लगा। जब वे झील के मध्य में पहुँचे तब परी ने अपना जादू का डंडा घुमाया। तभी वहाँ का पानी हट गया और नीचे जाने की सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं। दोनों सीढ़ियों से नीचे उतर कर एक ऐसे सुन्दर महल में पहुँचे जहाँ की दीवारों में अन्धेरी रात में जगमगाते तारों की तरह हीरे जड़े थे। फर्श मानों चमचमाते सोने के पत्तरों से बनी हो। सैकड़ों परियों ने आकर उनका स्वागत किया और वे इन दोनों को अन्दर के कमरों में ले गये।

नीमा ने अनुमान लगाया कि उसे यहाँ लाने

एक दिन उसने हवा में ठण्ढ महसूस किया। मैदान में तुषार दिखाई पड़ा और शाम तक झील जम गई। उस रात को उसने परी से कहा कि उसे वापस जाना होगा क्योंकि मुलकिला के ढलानों पर बहुत कम हरी घास है। यदि वह भेड़ों को तराई में नहीं ले गया तो वे बच नहीं पायेंगे।

रानी परी उदास हो गई। उसने अनुरोध किया, "नीमा, वादा करो कि वसन्त ऋतु में जब फूल खिलने लगेंगे और पर्वत के ढलानों पर हरी घास फिर से उग आयेगी तब तुम जरूर आओगे। मैं

लम्बे शीतकाल तक तुम्हारा इन्तजार करूँगी। यह भी वादा करो कि हम दोनों की मुलाकात के बारे में तुम किसी से कुछ नहीं बोलोगे।''

नीमा ने वादा किया। जब परी रानी झील के तट से चली गई तब नीमा की निगाहें तब तक उस पर टिकी रहीं जब तक उसने झील के मध्य में पहुँच कर जादू की छड़ी नहीं घुमाई। अगले ही क्षण वह अदृश्य हो गई। नीमा के मुँह से दुख की एक आह निकल गई। वह भेड़ों के साथ अपने गाँव की ओर चल पड़ा। भेड़ ठण्ढी हवा से बचने के लिए तेजी से दौड़ने लगे।

उस जाड़े के मौसम में डोल्मा ने देखा कि नीमा ज्यादातर अकेला रहता है। कभी-कभी वह देर से सवालों का जवाब देता है। अभी सर्दियाँ खत्म नहीं हुई थीं, लेकिन हर रोज सवेरे नीमा क्षितिज को निहारता रहता था। सूरज चोटियों से बाहर देर से निकलता था, घास अभी भी भूरी थी और पेड़-पौधे सूखे थे-अभी फूलों में कलियाँ नहीं फूटी थीं।

एक दिन डोल्मा ने देखा कि नीमा पर्वतों की ओर जाने की तैयारी कर रहा है। जब उसने खाने-का सामान माँगा तो डोल्मा चकित रह गई। ''नीमा, गर्मियाँ अभी शुरू नहीं हुई हैं। अभी भी बर्फ़ जमी है भेड़ मर जायेंगे। बर्फ पिघलने में एक-दो सप्ताह और लग जायेंगे।''

नीमा ने बहुत देर तक कोई उत्तर नहीं दिया। डोल्मा ने सोचा कि उसे विचारों में खोने नहीं देना चाहिये। उसने उसे पुकारा, ''नीमा, यहाँ आओ और कुछ लकडियाँ काट दो।''

वह अभी भी गहरे बिचारों में खोया था। ''नीमा!'' डोल्मा चीखती हुई बोली,''तुम अपने को क्या समझते हो? स्पीति का देवता? और तुम चाहते हो कि मैं सोने के प्याले में हुजूर की सेवा में गरम शोरबा परोस कर दूँ?''

नीमा ने अपनी भाभी को कभी उलाहना नहीं दिया था। लेकिन आज उस पर नाराज था। ''शोरबा तुम इसे कहते हो? यह तो जादूगरनी की शराब जैसा है। याक भी इसे देख कर मुँह फेर लेगा। पह !''

डोल्मा को लगा मानों किसी तेज धार से उस पर बार कर दिया गया हो। ''अच्छा ! तो तुम्हें
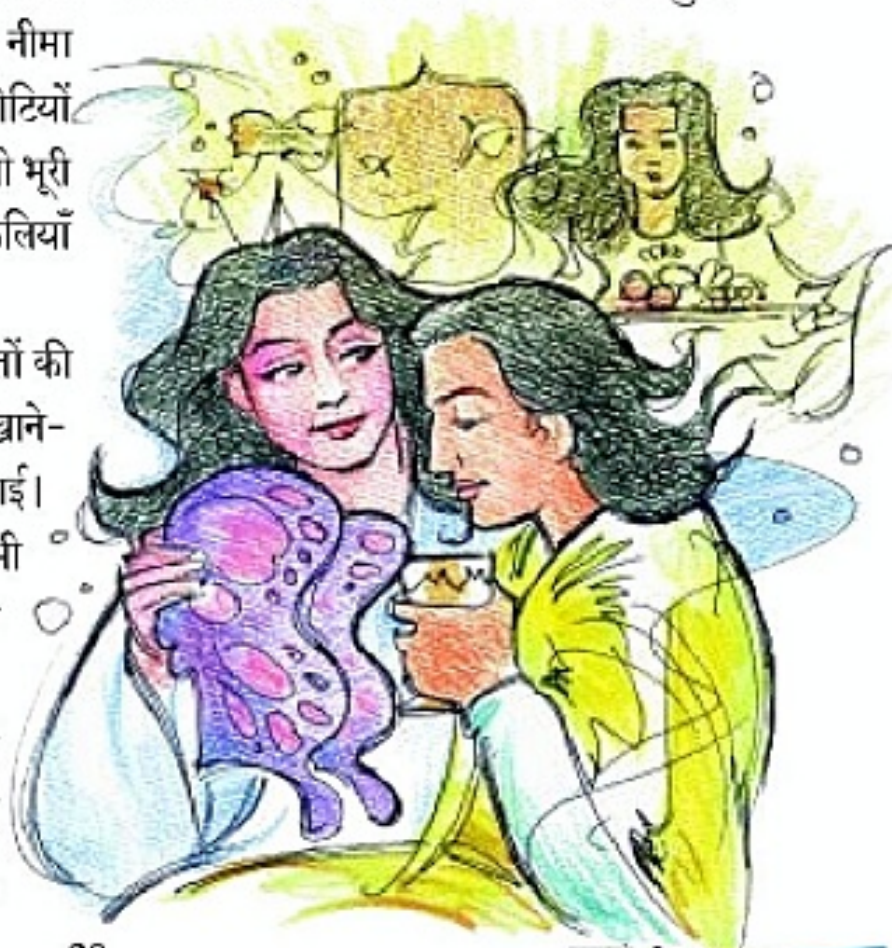
मेरा खाना पसन्द नहीं आता। तुम्हारी बात से तो ऐसा लगता है जैसे चन्द्रताल की परी तुम्हें सोने के प्याले में मदिरा पिला रही हो! श्शः!''

''पूरी पिछली गर्मियों में यही तो होता रहा। वह हर रात आकर मुझे ले जाती और सुबह में छोड़ जाती। तुम्हें क्या पता है?'' अचानक नीमा को याद आया कि रानी परी ने उसे उसके साथ मुलाकात की बात किसी को बताने से मना किया है।

''तो यह बात है! तब उसी परी के पास क्यों नहीं चले जाते।'' डोल्मा फुट पड़ी। पर शीघ्र उसने महसूस किया कि उसे इतना कठोर नहीं होना चाहिये था। तभी अचानक नीमा घर से बाहर निकल गया।

नीमा सीधे निकट के मठ में जाकर प्रार्थना करने लगा। उसने प्रार्थना की कि गर्मियाँ जल्दी शुरू हो जायें। कुछ देर बाद वह घर जाकर लकड़ियाँ काटने लगा। आवाज सुन कर डोल्मा बाहर आई और सिर्फ मुस्कुराई।

हर सुबह नीमा बाहर आकर ध्यान से यह देखने की कोशिश करता कि क्या पहाड़ के ढलानों पर कुछ हरियाली आई है या नहीं। वह, जो भी घर का काम उसे दिया जाता, तुरन्त कर देता और दौड़ता हुआ मठ में जाकर यह पुकार उठता, ''हे प्रभु! बता कि कब आयेगा बसन्त?''

और आखिरकार जब बसन्त आ गया, वह अपने भेड़ों को लेकर मुलकिला की ओर चल पड़ा। उसने गुफा की सफाई की, भेड़ों के लिए बाड़ा बनाया और वह रात में झील के तट पर जाकर परी रानी की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन वह नहीं आई। एक रात, दूसरी रात और इस प्रकार सात रातें बीत गईं पर परी दिखाई नहीं पड़ी। क्या वह उससे नाराज हो गई है? यह उसे कैसे पता चलेगा?
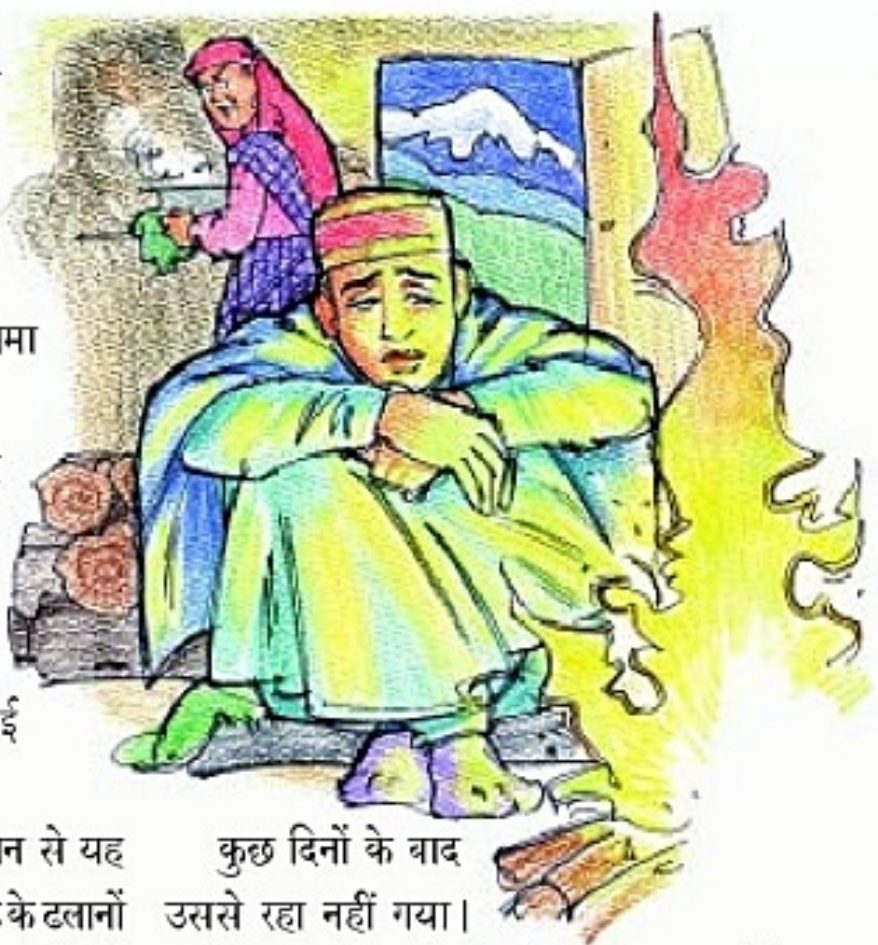
कुछ दिनों के बाद उससे रहा नहीं गया। ''यदि वह नहीं आती तो मुझे उसके पास क्यों नहीं जाना चाहिये?'' नीमा धीरे-धीरे झील के पानी में उतरा और आगे बढ़ने लगा। वह गहराई में उतरता चला गया, पर मध्य तक नहीं पहुँच पाया। उसके बाद उसे किसी ने नहीं देखा।

# चन्दामामा प्रश्नावली-२

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION,
Bangalore

**जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।***

**सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।*

**इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से लिये गये हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं। वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।**

**आपको यह करना है:** १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ वर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ४. लिफ़ाफ़े पर **चन्दामामा प्रश्नावली-२** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ५. मार्च महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ६. मई महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. संस्कृत भाषा में रामायण के कितने पाठांतर हैं?

२. धरित्री दिवस, जल दिनोत्सव कब मनाये जाते हैं?

३. "मनुष्य को आपदा से उबारनेवाला है, धैर्य। किसी भी परिस्थिति में धैर्य खोये बिना जीवित रहते हुए महान बनिये" गुरु के उपदेश के अनुसार चलनेवाले युवराज का युवक सलाहकार कौन था। उस युवक का क्या नाम है? किस कहानी का वह पात्र है?

४. विश्व पाँच कालुष्यों से पीड़ित है। इसके पाँच मुख्य कारण हैं। वे क्या-क्या हैं?

५. क्या जानते हैं कि "लायहरोबा" क्या है?

६. अधिकार दर्प में चूर रहनेवाले कमज़ोरों को सताते हैं। ऐसे घमंडियों को यह कहकर सावधान किया जाता है कि अंत में उनकी हार निश्चित है, उनका गर्व-भंग होकर ही रहेगा। यह तथ्य बताती है, ग्रीक की एक प्राचीन कहानी। उस गाथा का और उसके नायक का क्या नाम है?

७. निम्नलिखित चित्र में तीनों पात्र कौन-कौन हैं?

# पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

## गौतम का गधा, गौतम का मित्र (अक्तूबर'०५)

तब गौतम ने सुभाष से पूछा कि तुम गधे को किस प्रकार से आदेश का पालन करना सिखा रहे थे। सुभाष ने कहा कि मैं गधे से कहता हूँ कि 'खाओ' पर वह नहीं खाता। फिर उसे डंडे से पीटता हूँ। उससे कहता हूँ काम के लिये तैयार हो जाओ। तब भी वह नहीं समझता और टस से मस नहीं होता। मैं फिर उसे पीटता हूँ। फिर भी वह कुछ नहीं सीख सका।

इतना सब सुनकर गौतम बोला- "तुमने गधे के साथ मित्रवत् व्यवहार नहीं किया बल्कि उसको पीटा, और गधे ने आपको अपना दुश्मन समझ लिया। इसके विपरीत मैंने अपने गधे को इस प्रकार सिखाया - मैं अपने गधे से कहता, खाओ और प्यार से उसके सर को सहलाता तथा उसे खाने के लिये कहने के साथ मैं खुद भी खाने लगता। इससे वह समझ जाता और खाना शुरू कर देता। इस प्रकार वह सारे आदेश समझने लगा और उनका पालन बखूबी करने लगा। अतः आप भी अपने गधे को प्यार से सिखायें। उसे प्यार करें। वह अवश्य आदेश का पालन करने लगेगा।"

***- मनाली जैन, ई.७४१, वैशाली नगर, जयपुर-३०२ ०२१***

## परिश्रम का मीठा फल (नवम्बर '०५)

परिश्रमी नाविक ने खुश होकर रुपये अपनी गाँठ में बांध लिए। इतने में पाँच व्यक्ति मंदिर से पर्वोत्सव देख कर नदी पार पालमपुर जाना चाहते थे। उन लोगों ने नाविक से सौदा तय किया और उन्हें भी इतना कम शुल्क लेना आश्चर्यचकित कर गया।

मगर नाविक तो अपनी ही रौ में मस्त नाव खेता रहा और तट आने पर माथे पर आयी पसीने की बूंदों को साफ किया और उतराई लेकर नाव किनारे लगा ही रहा था कि इतने में और सवारियाँ मिल गयीं। वह कोई गीत गुनगुनाते हुए कड़ी मेहनत और लगन से अपनी नाव को खेते हुए मन ही मन सोचने लगा-भले ही वह अन्य नाविकों की अपेक्षा कुछ कम शुल्क लेता है मगर सस्ता होने के नाते उसे अन्य नाविकों की तुलना में ज़्यादा सवारियाँ मिलती हैं। जो नाविक ज़्यादा कमाने के चक्कर में एक-एक सवारी का दो-दो तीन-तीन रुपये लेते हैं, उनकी नाव सुबह से शाम तक नदी किनारे ही खड़ी रहती है। जबकि वह इतनी देर में चार-छः फेरे कर लेता है। फलस्वरूप मेहनत के बल पर वह खूब खुश रहता है। उसके व्यवहार से सवारियाँ भी ज़्यादा मिलती हैं। अन्य नाविक सवारी न मिलने के कारण खिन्न से रहते हैं जिससे सवारियाँ उनकी नाव पर बैठना भी नहीं चाहती हैं। इतने में तट आने पर सवारियों को उतार नयी सवारियाँ को बैठा दूसरे तट की तरफ नाव को खेने लगा।

***- अनुभव अग्रवाल, बलरामपुर-२७१ २०१ (उत्तरप्रदेश)***

# सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

## चक्रधर के भूत का हृदय-परिवर्तन (दिसम्बर '०५)

**रा**म ने विचार किया कि इस भूत ने पिछले जन्म में कोई अच्छा काम नहीं किया और लोगों को परेशान किया होगा। जिससे यह भूत बन गया, और अशांत रहने लगा है और पूर्व जन्म के अनुसार अब भी अशांति के ही कार्य कर रहा है। राम ने सोचा, कुछ ऐसा किया जाये जिससे इसकी अशांत आत्मा को शांति मिल जाये।

राम ने दूसरे ही दिन से अपने घर (जो पूर्व जन्म में भूत चक्रधर का मकान था) की रसोई में अच्छा खाना, दूध आदि रखना शुरू कर दिया। एक दिन जब राम घर से बाहर गया तो भूत उसके घर पर आया। उसने देखा कि राम भी रसोई में बहुत अच्छा खाना तथा दूध आदि रखा है। भूत ने पेट पर खाना खाया और दूध पिया। अब वह रोज आता और खाना खाकर चला जाता। भूत ने सोचा मैं जिस पर पत्थर बरसाता हूँ वही मुझे खाने के लिये इतने अच्छे पकवान आदि रख जाता है। उसे अपने आप पर बड़ी ग्लानि हुई और उसने राम पर पत्थर बरसाना छोड़ दिया और अच्छे काम करने लगा। अतः उसकी भूत योनि छूट गई और अच्छे सम्पन्न परिवार में उसका जन्म हुआ। इस प्रकार राम की सूझ-बूझ से चक्रधर के भूत का हृदय परिवर्तन हो गया और अच्छी योनि में उसका पुनर्जन्म हुआ।

***- चर्चित जैन, जयपुर-३०२ ०२१ (राजस्थान)***

## विदूषक का विजय (जनवरी '०६)

**रा**जा की बात सुनकर विदूषक एक बारगी चुप हो गया। इसे देखकर उपस्थित दरबारी खुश हुए कि आखिरकार विदूषक के पास भी राजा के मज़ाक का उत्तर नहीं है। कुछ समय पश्चात विदूषक ने उत्तर दिया, ''महाराज, क्षमा करें, यह सब आप की वजह से है। इससे पता चलता है कि आप की सूझ-बूझ कितनी है, आप में राजकाज चलाने की बुद्धि कितनी है।'' इस पर राजा ने कहा, ''तुम्हारे दुबले होने और मेरी सूझ-बूझ के बीच क्या भला सम्बन्ध है?'' ''है तभी तो कह रहा हूँ। मेरे घोड़े का तगड़ा होने व मेरे दुबला होने का कारण मुझे मिलने वाला अल्प वेतन है। मुझे जितना वेतन मिलता है, उससे मैं आप के दिये घोड़े की ही देखभाल अच्छी तरह कर पाता हूँ एवं बचे हुए अपर्याप्त वेतन को अपने लिये खर्च करता हूँ। अच्छा खाना न मिल पाने के कारण मैं दुबला हूँ। इसी से आप की सूझ-बूझ और बुद्धि का पता चलता हूँ।'' विदूषक में कहा। यह सुनकर राजा बहुत शर्मिन्दा हुआ एवं सभी दरबारियों का सिर शर्म से झुक गया। वापस आकर राजा ने विदूषक को न केवल पुरस्कार देकर सम्मानित किया बल्कि उसका वेतन भी बढ़ा दिया।

***- संकल्प सिंह गहरवार, गाज़ियाबाद-२०१ ०१०***

# फलीभूत देशाटन

जयदेव विशाल देश का शासक था। विक्रम उसका बेटा था। विक्रम का जैसे ही राज्याभिषेक हुआ, उसने पिता से कहा, ''राजा की जिम्मेदारियों को निभाने के पहले मैंने देशाटन करने का निश्चय किया है। आशीर्वाद दीजिये और मुझे अनुमति दीजिये।''

जयदेव ने कहा, ''बहुरूपियों के वेष में जनता के साथ घुल-मिल जाना, उनके कष्टों और सुखों की जानकारी पाना और इनके लिए देश का भ्रमण करना वर्षों से चली आती हुई परिपाटी है। किन्तु इसमें खतरों की संभावना है। अच्छा यही होगा कि बहुरूपिया के वेष में जाने के बदले युवराज बनकर देश भर में घूम आना।''

विक्रम ने पिता की इस सलाह को न मानते हुए कहा, ''पिताश्री, बहुरूपिया बनकर ही मैं जनता के दुख-सुख जानूँगा। युवराज बनकर अगर उनके बीच में जाऊँगा तो जनता डर के मारे सच नहीं बतायेगी। सच जानकर उनकी भलाई करना मेरा कर्तव्य है। आप ही की तरह अच्छा राजा कहलाने का इच्छुक हूँ। कृपया बहुरूपिये के बेष में ही जाने की मुझे अनुमति दीजिये।'' पिता की अनुमति लेकर वह देशाटन करने निकल पड़ा।

विक्रम के साथ मंत्री का बेटा विवेक वर्मा भी निकल पड़ा। दोनों ने सामान्य नागरिकों की तरह बेष धारण किया और घोड़ों पर सवार होकर निकल पड़े। दूर के प्रदेश की जनता के बीच एक महीने तक वे रहे। जहाँ कहीं भी वे जाते, बिना माँगे ही उनकी ज़रूरतें पूरी हो जाती थीं। विक्रम को इस बात पर आनंद हुआ कि पिता का शासन बढ़िया है, इसीलिए लोग मुसाफिरों व अपरिचित लोगों का इतना आदर कर रहे हैं।

एक और महीना बीत चुकने के बाद विक्रम और विवेक वर्मा राजधानी लौटने निकले। शाम को वे एक जंगल में पहुँचे।

मार्कंडेय शास्त्री

बिक्रम ने एक चट्टान पर खडे होकर देखते हुए कहा, ''यहाँ से थोड़ी दूरी पर कोई इमारत दिखाई दे रही है। वह शायद उजड़ा घर होगा या कोई पुराना मंदिर। इस रात को वहीं ठहर जायेंगे।''

दोनों वहाँ गये। सचमुच ही वह एक छोटा-सा मंदिर था। मंदिर के प्रवेश द्वार बंद थे। द्वार के दोनों ओर दो चबूतरे थे। दोनों जब उन चबूतरों पर बैठने ही वाले थे कि इतने में वहाँ एक गाड़ी आयी और मंदिर के सामने रुक गयी। पुजारी उसमें से थाली सहित उतरा।

पुजारी मंदिर के अंदर गया, मंत्र पढ़े, देवी को नैवेद्य चढ़ाया और बाहर आकर उनके बारे में विवरण पूछे। जैसे ही दोनों ने अपने को मुसाफिर कहा, वह उन्हें ध्यान से देख हँस पड़ा।

पुजारी ने उनसे कहा, ''इस मंदिर की देवी का नाम चंदना है। इस जंगल में चंदन के वृक्षों की भरमार है। इस जंगल पर राजगुरु के ही अधिकार सुरक्षित हैं। यहाँ से आधे घंटे में हम अपना गाँव पहुँच सकते हैं। इस रात को मेरे ही घर में ठहर जाइये। हमारे राजगुरु के छोटे भाई इस मंदिर के धर्मकर्ता हैं। मैं राजगुरु के चाचा का बेटा हूँ। राजनीति शास्त्र का अध्ययन कर चुका हूँ। मुझे राजा का आदर प्राप्त होने तक राजगुरु ने यह पुजारी पद दिया है।''

पुजारी की इच्छा पर विक्रम और विवेक वर्मा उसके साथ मंदिर के अंदर गये। रक्त चंदन की लकड़ी से निर्मित चंदना माता की मूर्ति बड़ी ही
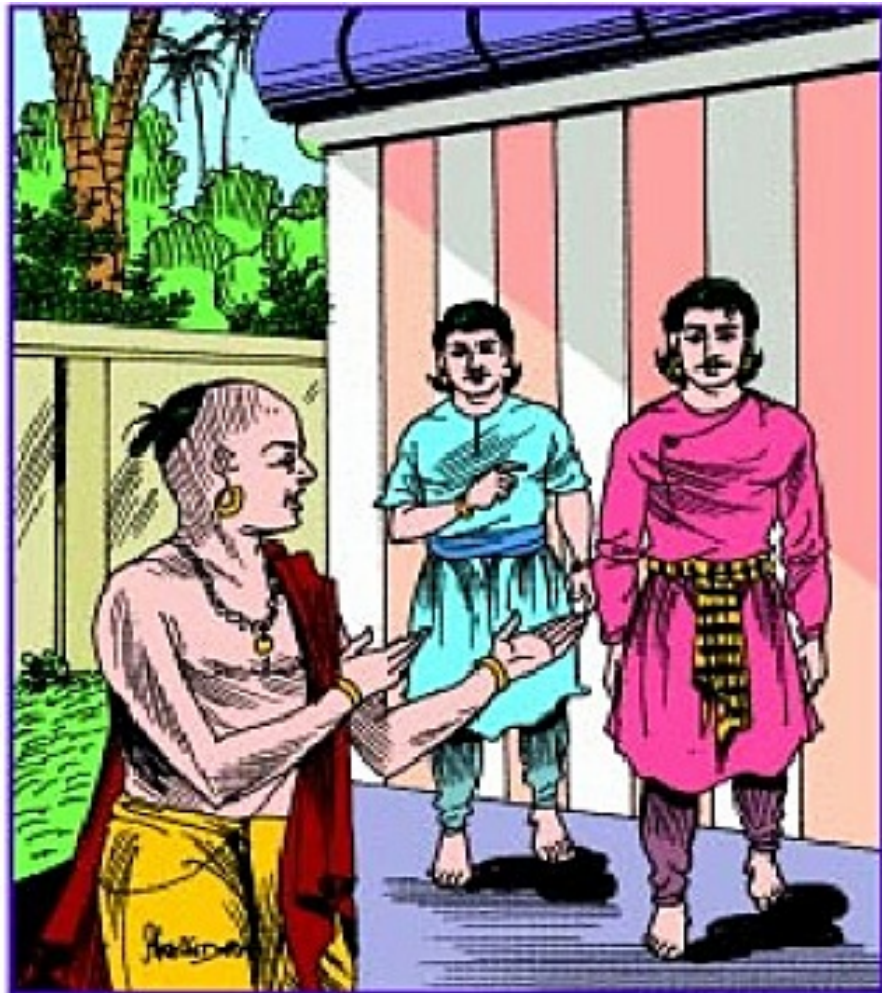
मनोहर लग रही थी। युवराज और विवेक वर्मा ने भक्तिपूर्वक आंखें बंद करके नमस्कार किया। तब पुजारी की बातें सुनकर उन्होंने चकित होकर आँखें खोलीं।

पुजारी कह रहा था, ''चंदन माता भावी महाराज और मंत्री को आशीर्वाद देती है।'' पुजारी की बातों पर वे नाराज़ हो उठे और कहा, ''आप कैसी बातें कर रहे हैं?''

पुजारी ने निर्भय होकर कहा, ''प्रभु, मुझपर नाराज़ न हों। आपसे मैं कह चुका हूँ कि मैंने राजनीति शास्त्र का अध्ययन किया है। राजा के दरबार में स्थान पाने की इच्छा रखता हूँ। यह कल्पना करना मेरे लिए कोई कठिन काम नहीं है कि आप देशाटन पर निकले युवराज व मंत्री के पुत्र हैं। आपकी व्यवहार शैली में रजोगुण स्पष्ट
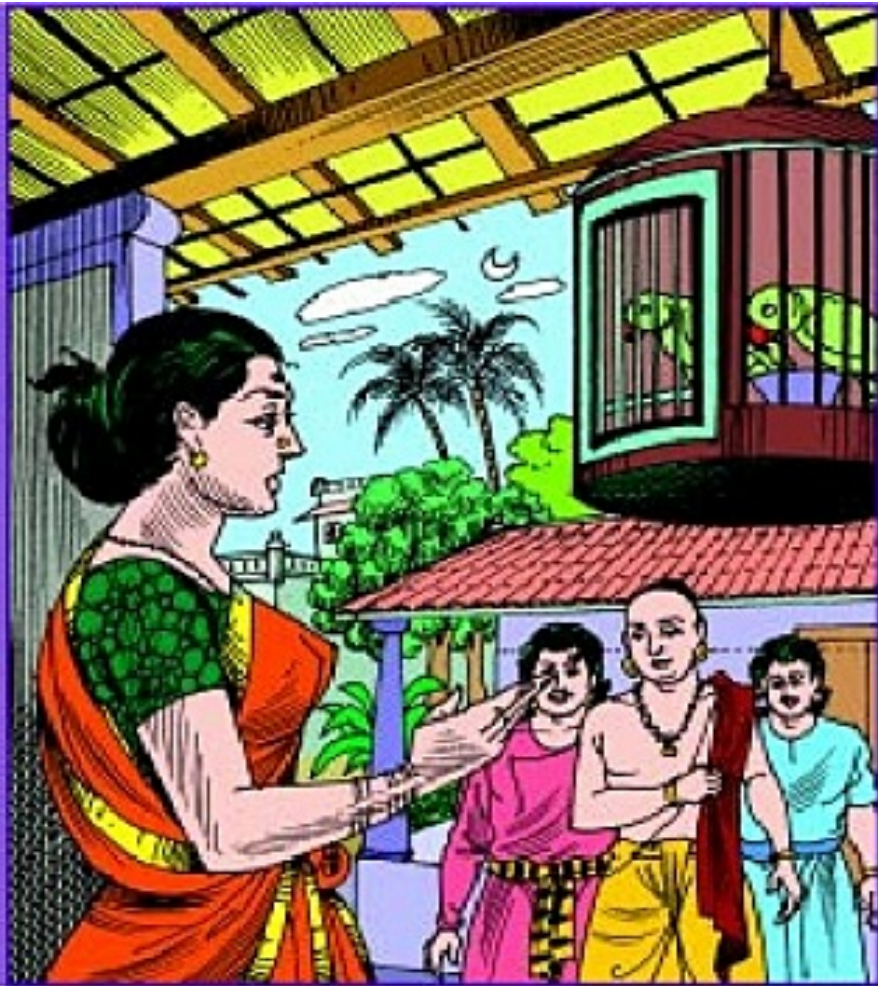
गोचर होते हैं। ऐसे उत्तम घोडों पर सवार होकर आपका आना इस सत्य का द्योतक है।''

पुजारी की मेधा शक्ति पर वे दोनों चकित रह गये। पुजारी ने उनसे सविनय कहा, ''देशाटन का प्रधान उद्देश्य है, परिशीलन। फिर उनमें निहित अच्छाई-बुराई को जानकर, शासन में उन्हें कहाँ तक अमल में लाना है, इसका निर्णय करना विवेक पर निर्भर होता है। परिपाटी के नाम पर देशाटन पर निकले आप पर महाराज की दृष्टि तो होगी ही। आपकी जानकारी के बिना, आपको आफ़त में फंसने से बचाने के लिए, उन्होंने आवश्यक प्रबंध किये ही होंगे। लोग आपको पहचानकर भी अनजानों की तरह व्यवहार करते हैं। मेरी ही तरह कई लोगों ने आपको पहचान लिया होगा।''

विक्रम ने ''हाँ'' के भाव में सिर हिलाया और कहा, ''पहले मैं समझ बैठा कि आप एक साधारण पुजारी हैं। अब लगता है कि आपसे सीखने के लिए राजनीति शास्त्र संबंधी बहुत से विषय आपके पास हैं। मैं और विवेक वर्मा कुछ दिनों तक आपके गाँव में रहेंगे।''

बाद पुजारी गाड़ी में और दोनों युवक घोड़े पर सवार होकर पुजारी के गाँव में पहुँचे।

घर के सामने पिंजडे में बंद दो तोतों ने युवराज और मंत्री के बेटे को देखकर कहा, ''आइये, आइये, आपका स्वागत है।'' फिर चिल्ला पड़े, ''माँ जी, गुरु जी दो अतिथियों को घर ले आये।''

''आपके गुरुजी के लिए यह थोडे ही नयी आदत है। रात के समय जो भी मंदिर के पास रहते हैं, उन्हें साथ लिये आते हैं। तोतों को बोलना तो सिखाया पर चार एकड ज़मीन खरीद नहीं पाये।'' कहती हुई पत्नी बाहर आयी।

विक्रम और विवेक वर्मा को आश्चर्य भरी आँखों से देखती रही और कुछ कहने ही वाली थी कि विक्रम ने कहा, ''तोतों से भी बुलवाने का कौशल इनमें भरा पड़ा है। ये महान गुरु हैं। हम इनसे राजनीति शास्त्र सीखने आये। अपने घर में रहकर सीखने की अनुमति दीजिये।''

इसपर गुरु की पत्नी हँस पड़ी और बोली, ''पुजारी जी राजगुरु के चाचा के पुत्र हैं। इन्हें बडी आशा है कि किसी न किसी दिन वे राज दरबार में स्थान दिलायेंगे। परंतु यह आशा पूरी होती नज़र नहीं आती। आप जैसे शिष्यों को

पढ़ाते तो अब तक थोड़ा-बहुत कमा लिया होता। पुजारी बने रहने की आवश्यकता नहीं होती। इन्हें भली-भांति मालूम है कि इन्हें राजगुरु दरबार में पद नहीं दिलायेंगे, क्योंकि उन्हें इस बात का भय है कि ये कहीं उनके प्रतिद्वंद्वी न बन जाएँ और उनका पद न छीन लें। फिर भी उन्हीं का विश्वास करनेवाले इनसे आप क्या सीखेंगे?''

''राजनीति,'' युवराज और मंत्री के बेटे ने एक साथ कहा।

पुजारी की पत्नी ठठाकर हँस पड़ी और बोली, ''राजा उस व्यक्ति से बारंबार सलाहें पूछते रहते हैं, जो उन्हें अच्छा लगता है और जिसे उन्होंने आश्रय दिया। प्रजा उस व्यक्ति को महान मानती है और अपने शक्ति-सामर्थ्य को भुलाकर सहायता करने के लिए गिडगिडाती है। तब वह व्यक्ति प्रतिभावान व्यक्ति को राजा से मिलने नहीं देता। बरगद के वृक्ष की साया के पौधे की तरह अपनी साया में ही उसे दबा देता है और बढ़ने नहीं देता। इनकी बड़ी इच्छा रही है कि एक ऐसे महाराज को तैयार करूँ, जो इन प्रतिभावानों को पहचानें। इसी इच्छा की पूर्ति के लिए इन्होंने राजनीति शास्त्र का अध्ययन भी किया। पर राजदरबार में इन्हें कोई नौकरी नहीं मिली और पुजारी के पुजारी ही रह गये। फिर भला, ये आपको राजनीति क्या सिखायेंगे?''

पत्नी यों बोलती ही रही, पर पुजारी मुस्कुराता हुआ युवराज व मंत्री के बेटे को देखता रहा।

विक्रम ने कहा, ''देशाटन पर निकले हम कौन हैं, आपने भांप लिया होगा। आपने हमें सिखा दिया कि देशाटन का उद्देश्य है प्रतिभावानों की पहचान और उन्हें राज दरबार में समुचित स्थान देकर उनकी सलाहें लेते रहना। आपने यह सत्य हमें सिखाकर बड़ा उपकार किया। हम आपके कृतज्ञ हैं। पुजारीजी जैसे गुरुओं की सहायता से राजनीति सीखूँगा। अपने शासनकाल में इनकी सलाहें लूँगा।''

इसके बाद विक्रम ने पुजारी को ही नहीं, सभी क्षेत्रों के दक्षों और योग्य व्यक्तियों को अपने दरबार में स्थान दिया और अच्छा शासक कहलाया।

महापुरुषों के जीवन की झाँकियाँ (३)

# शत्रुविजय का राजपथ

**म**कदूनिया के राजा फिलिप को सामान्य रूप से सिकन्दर महान के पिता के रूप में याद किया जाता है। एक ओर अपने समय के यूनानी राजाओं में वह सबसे अधिक शक्तिशाली था और दूसरी ओर उसे ज्ञान की बातें सीखने का बहुत शौक था। अपने बेटे के शिक्षक के रूप में महान

दार्शनिक अरस्तू की बहाली ज्ञान के प्रति उसके अगाध प्रेम का पर्याप्त प्रमाण है।

उसके राज्य के एक कोने में आर्किडियस नाम का एक छोटा जमीन्दार रहता था जो राजा फिलिप की कटु आलोचना किया करता था। उसकी इस आदत के बारे में अनेक अधिकारियों, जासूसों और सामन्तों ने राजा के पास शिकायत की और सबने उसे राजा का शत्रु बताया।

एक बार राजा ने उसी जिले में पड़ाव लगाया जहाँ आर्किडियस रहता था। राजा ने उसे बुला भेजा। "मैं अपने दुश्मन का खात्मा कर दूँगा," उसने अपने साथियों और अधिकारियों से कहा।

"उसके लिए यही उचित होगा," सबने सहमति प्रकट की।

"बिलकुल ठीक! मैं उसे खत्म कर देना चाहता हूँ।" राजा ने दृढ़ स्वर में कहा।

आर्किडियस के लिए बच निकलने का कोई रास्ता नहीं था। उसे राजा के दूत के द्वारा राजा के पास लाया गया। घर से विदा होते समय आखिरी मुलाकात समझ कर वह रोने लगा। वह निश्चित रूप से नहीं जानता था कि उसे मौत की सजा मिलेगी। फिर भी इतना निश्चित था कि उसे कड़ी से कड़ी सज़ा मिलेगी; आजीवन जेल में सड़ भी सकता था।

उस आदमी को राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने सब को कमरे से बाहर चले जाने का आदेश दिया। लेकिन उसके अंगरक्षक बाहर इन्तजार कर रहे थे ताके वे राजा के इशारे पर दुश्मन को ठिकाने लगा सकें।

एक घण्टे के बाद सबको यह देख कर आश्चर्य हुआ कि राजा फिलिप और आर्किडियस दो दोस्तों की तरह बातें करते-हँसते बाहर निकले। राजा ने अपने कुछ अधिकारियों को उस महाशय को ढेर सारे उपहारों के साथ उसके अपने घर तक सुरक्षित छोड़ आने का आदेश दिया।

''यह कैसी बात है, महाराज? क्या आपने अपने दुश्मन को खत्म करने का संकल्प नहीं किया था?'' एक सामन्त अपनी उत्कण्ठा को दबा न सका और पूछ बैठा।

''बेशक, मैंने शत्रु का खात्मा कर दिया!'' राजा बोला, ''तुम्हें शीघ्र ही पता चला जायेगा कि न केवल मैंने एक दुश्मन को खत्म किया है, बल्कि एक दोस्त भी पा लिया है। आर्किडियस एक अच्छा आदमी है। वह, कुछ तो झूठी अफवाहों के कारण और कुछ हमारी कार्रवाइयों की वजह से, हमारा दुश्मन हो गया था। मैंने अफवाहों को स्पष्ट कर दिया, अपनी कार्रवाइयों का कारण बता दिया और अपनी भूलों को मान लिया। हालात को ठीक से समझते हुए उसके अन्दर का हमारा दुश्मन गायब हो गया। उसी समझ ने उसके दिल में हमारे लिए सद्‌भाव पैदा कर दिया। उसने महसूस कर लिया कि एक राजा की हैसियत से मुझे जो कुछ कार्रवाई करनी पड़ी वह गलत दिखाई पड़ती थी, लेकिन जरूरी थी।''

राजा हँसता हुआ निष्कर्ष में बोला, ''दुश्मन को मारने से नये दुश्मन पैदा होते हैं। दुश्मन को दोस्त में बदल देने से न केवल नये दोस्त मिलते हैं, बल्कि शान्ति सुनिश्चित हो जाती है।''

इस तरह, फिलिप ने राजा होते हुए भी यह दिखा दिया कि दुश्मन को जीतने का सच्चा राजपथ हिंसा की शक्ति नहीं बल्कि समझदारी और सहानुभूति की शक्ति है। *-(एम.डी.)*

# नारायण पांडे की वाक् शुद्धि

माधव पांडे गदानगर का निवासी था। वह बड़ा ही राम भक्त था। उसकी पत्नी जानकी का स्वभाव और अभिरुचियाँ पति के ही जैसे थे। उनका बेटा नारायण पांडे गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहा था।

माधव पांडे राम की कथाएँ सुनाता था। कई लोग हर दिन इन कथाओं को सुनने उसके घर आया करते थे। संतुष्ट होकर जाने के पहले वे लोग थोडा-बहुत जो देते थे, उसी से वह अपना घर चलाया करता था।

नगरपाल गीर्वाणी उसकी राम कथाएँ सुनना चाहता था। एक दिन उसने माधव पांडे को बुलाया और कहा, ''तुम्हारी कथाएँ सुनने की बड़ी इच्छा है। हर दिन मेरे दरबार में आना और सभिकों को कथाएँ सुनाना। जितना धन चाहते हो, दूँगा।''

माधव पांडे ने कहा, ''यजमान्, आप धन देकर राम कथाएँ सुनना चाहते हैं। अगर मैं आपके दरबार में आऊँ और कथाएँ सुनाऊँ तो इसका यह मतलब हुआ कि मैं धन के लिए ही यह काम कर रहा हूँ। किन्तु मैं उन्हीं राम भक्तों को ये कथाएँ सुनाता हूँ, जो भक्ति-भाव से मेरे घर आते हैं। आप चाहें तो मेरे घर आकर वे कथाएँ सुन सकते हैं। आपसे मैं प्रतिफल भी नहीं मांगूँगा।''

गीर्वाणी नाराज़ हो उठा। पर कुछ कह नहीं पाया और चुप रह गया। माधव पांडे के पुत्र नारायण पांडे ने शिक्षा समाप्त की और दरबार में नौकरी पाने के लिए गीर्वाणी से मिला। गीर्वाणी ने खुश होते हुए कहा, ''तुम्हारे पिता केवल राम कथाएँ सुनाते हैं। तुम उपनिषद, वेद, अष्टादशपुराण, प्रबंध काव्य, नाटकों की कथाएँ आदि हर दिन मेरे दरबार में सुनाते रहना। लोग अगर तुम्हारे पिता से कथाएँ सुनना बंद कर दें

और तुम्हारी कथाएँ सुनने मेरे दरबार में आने लगें तो तुम्हें बडी धन-राशि दूँगा।''

नारायण पांडे ने कहा, ''रसीले ढंग से कथाएँ सुनाने की मेरी तीव्र इच्छा है। पर, आप चाहते हैं कि मैं अपने पिता से प्रतिस्पर्धा करूँ। यह मुझे समुचित नहीं लगता।''

''मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि केवल पांडित्य में अपने पिता से प्रतिद्वंद्विता करो। अपनी कमाई से तुम सुखी रह सकते हो और अपने माता-पिता को भी सुखी रख सकते हो। इसमें अनुचित क्या है?'' गीर्वाणी ने पूछा।

नारायण पांडे को ये बातें सही लगीं। घर लौटने के बाद जब उसने यह विषय अपने पिता से कहा, तो उसने कहा, ''जो तुम्हें सही लगता है, करना। केवल धन ही को महत्व मत देना।''

नारायण पांडे, गीर्वाणी के दरबार में काम पर लग गया। गीर्वाणी ने उसके बारे में विस्तृत रूप से प्रचार कराया। इस वजह से नारायण पांडे से कथाएँ सुनने बड़ी संख्या में लोग दरबार में आने लगे। गीर्वाणी ने उसे बड़ी रकम दी और उसका सत्कार किया।

नारायण पांडे ने उसी नगर में एक बड़ा घर खरीदा। लक्ष्मी नामक एक सुंदर लड़की से शादी की और आराम से ज़िन्दगी गुज़ारने लगा।

परंतु, इससे पिता माधव पांडे को संतुष्टि नहीं मिली। क्रमशः उसकी कथाएँ सुनने आनेवालों की संख्या घटती गयी। वह चिंतित हो उठा। इस स्थिति में, श्री राम उसे सपने में दिखायी पड़े

और बोले, ''चक्रपुर में मेरा मंदिर उजड़ गया है। वहाँ चले जाना और मेरी पूजा करना।''

जैसे ही वह जागा, उसने लोगों से पूछकर चक्रपुर के बारे में जानकारी प्राप्त की। मालूम हुआ कि वह गदानगर से दूर पर्वतों के बीच में स्थित है। वहाँ की भूमि खेती के योग्य है, पर वर्षा के अभाव के कारण वहाँ पीने के लिए भी पानी नहीं मिलता। इसी वजह से ग्रामीण वह प्रदेश छोड़कर चले गये और कहीं बस गये। अब उस गाँव में कुछ जंगली रहते हैं। राम के मंदिर की देखभाल करनेवाला कोई नहीं रहा।

माधव पांडे पत्नी समेत चक्रपुर पहुँच गया। जंगल के सरदार को जब उनके आने का कारण मालूम हुआ तो उसने माधव पांडे से कहा, ''तुम दोनों उस उजड़े मंदिर में पूजा करोगे तो हम एक

हफ्ते तक तुम दोनों की देखभाल करेंगे। इस बीच कोई चमत्कार हो जाए तो तुम लोग यहीं रह सकते हो। अन्यथा तुम्हें गाँव में रहने नहीं देंगे।''

माधव पांडे और जानकी राम मंदिर गये। मंदिर में दीप जलाये और पूजा की। रात को जब वे वहीं सो गये तब सपने में श्रीराम प्रत्यक्ष हुए और माधव पांडे से कहा, ''तुम्हारी भक्ति-श्रद्धा पर मैं बहुत संतुष्ट हूँ। तुम्हें जो चाहिये, माँगो।''

माधव पांडे ने श्रीराम को प्रणाम करके कहा, ''इस हफ्ते में ग्रामीणों को अपनी कोई महिमा दिखाइये।''

''ठीक है, जैसे ही नींद से जागोगे, तुम्हें तुम्हारे बग़ल में चंदन की एक अच्छी लकड़ी दिखायी देगी। पहले उसे अपने दायें हाथ में लो। तब तुम्हें ज्ञात होगा कि कब क्या किया जाए। फिर उसे बायें हाथ में लेना। तुम जो कहोगे, वह होकर रहेगा। चंदन की लकड़ी केवल तुम्हारे वारिसों के उपयोग में ही आयेगी।'' यों कहकर श्रीराम अदृश्य हो गये।

जागने पर माधव पांडे ने बग़ल में चंदन की लकड़ी पायी। उसने अपने सपने के बारे में पत्नी को भी बताया। दोनों पास ही के सरोवर में जाकर नहाये। माधव पांडे ने बायें हाथ में चंदन की लकड़ी ली और कहा, ''यह मंदिर बिल्कुल ही संगमरमर का नवीन मंदिर बन जाए।''

देखते-देखते वह उजड़ा मंदिर संगमरमर के मंदिर में परिवर्तित हो गया। इस चमत्कार को देखकर सभी ग्रामीण माधव के पैरों पर गिर पड़े।

इस बीच गदानगर में चंद परिवर्तन हुए। जब समाचार फैल गया कि नारायण पांडे ने कथाएँ सुनाकर पर्याप्त धन कमा लिया तो कलाकार नर्तकियाँ वहाँ आ पहुँचीं। इससे नारायण पांडे की कथाओं में नगरवासियों की कोई अभिरुचि नहीं रही। आमदनी बहुत कम हो गयी। उसने यह बात गीर्वाणी से बतायी।

गीर्वाणी ने कहा, ''तुम अपने पिता के इकलौते बेटे हो। यहाँ रहकर करोगे भी क्या? चक्रपुर जाओ और उन्हीं के साथ रहना।'' व्यंग्य-भरे स्वर में उसने कहा।

नारायण पांडे भांप गया कि गीर्वाणी के मन में अब उसके लिए कोई सद्भावना नहीं है। वह पत्नी को लेकर दूसरे ही दिन चक्रपुर गया। बेटे और बहू को देखकर माधव पांडे और जानकी

बेहद खुश हुए। माधव पांडे ने बेटे को थोड़ी दूर ले जाकर चंदन की महिमा के बारे में उसे बताया। फिर कहा, ''स्वयं भगवान श्रीराम तुम्हें यहाँ ले आये। अपना हृदय राम भक्ति से भर लो। जैसे ही तुम योग्य बन जाओगे, इस मंदिर की जिम्मेदारी तुम्हें सौंप दूँगा।''

चंदन की लकड़ी की महिमा के बारे में नारायण पांडे ने अपनी पत्नी लक्ष्मी को भी बताया। यह सुनते ही लक्ष्मी के मन में दुर्बुद्धि जगी कि उसका पति इस मंदिर का पुजारी बने। वह एक दवा जानती थी, जिसे खानेवाला एक महीने तक पलंग पर ही अस्वस्थ होकर लेटा रहेगा और फिर उसके बाद ठीक हो जायेगा। लक्ष्मी ने अपने ससुर को वह दवा खिलायी। माधव पांडे तुरंत अस्वस्थ हो गया और पलंग पर लेटा रहा।

वैद्यों ने माधव पांडे की परीक्षा की और कहा, ''यह बीमारी ख़तरनाक नहीं है, इसकी कोई दवा भी नहीं है। बस, पानी में भीगना मत।''

पिता के बीमार पड जाने के कारण नारायण पांडे मंदिर का पुजारी बन गया। इसी को मौक़ा समझकर लक्ष्मी ने पति से कहा, ''अपनी वाक् शुद्धि का सबूत प्रजा को दो और उनकी प्रशंसा पाओ।''

पत्नी के कहे अनुसार नारायण पांडे ने पहले दिन मंदिर में आये लोगों से कहा, ''मुझमें वाक् शुद्धि है। आपमें से जिन्हें जो माँगना है, माँगो।''

कुछ लोगों ने चाहा कि उनके व्यापार में वृद्धि हो, कुछ ने निधियाँ चाहीं। यों तरह-तरह की
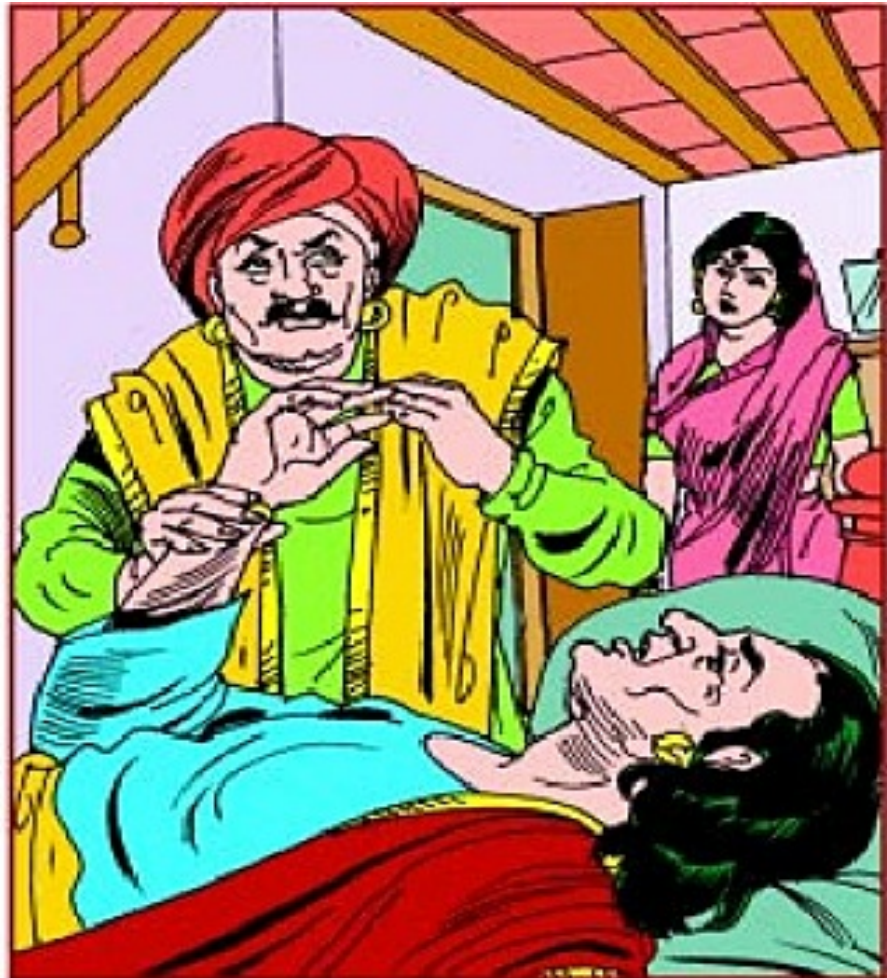
इच्छाएँ लोगों ने प्रकट कीं। वे सब फलीभूत हुईं। परंतु नारायण पांडे की पत्नी लक्ष्मी अकस्मात् पक्षाघात की शिकार हो गई। कारण जानने के लिए नारायण पांडे ने चंदन की लकड़ी हाथ में ली तो उसका सारा शरीर जलने लगा। वह बहुत ही परेशान हो उठा। ऐसे समय पर गाँव के सब लोग उसके पास आये और कहने लगे, ''आपके पिता ने हम सबकी भलाई की। वे अब बहुत ही अस्वस्थ हैं। उनकी पीड़ा हमसे देखी नहीं जाती। हम चाहते हैं कि जब तक आपके पिता स्वस्थ न हो जाएँ तब तक हमारे गाँव में वर्षा न हो।''

उनकी प्रार्थना के प्रभाव के कारण उस गाँव में वर्षा नहीं हुई। तालाब सूख गये। लोगों से ये तकलीफ़ें सही नहीं गयीं। तो वे फिर नारायण पांडे के पास आये और उन्हें बचाने की प्रार्थना

की। नारायण पांडे उन सबको लेकर पिता के पास गया और अनजाने में उससे जो अपराध हुआ, उसे क्षमा करने की विनती की। उसने चंदन की लकड़ी को पिता के हाथ में रखा। उसकी सहायता से माधव पांडे पूरा विषय जान गया और कहा, ''बेटे, पश्चाताप से बढ़कर कोई प्रायश्चित्त नहीं। अपने मन में श्रीराम को भर लो और निस्वार्थ होकर अपना कर्तव्य निभाओ।'' यह कहकर उसने चंदन की लकड़ी बेटे को दी।

नारायण पांडे ने चंदन की लकड़ी को क्या पकड़ा, उसके बदन की जलन गायब हो गयी। तब उसने जनता से कहा, ''आप सबकी प्रार्थना है कि मेरे पिता स्वस्थ हो जाएँ। आप सब यही चाहते हैं कि जब तक वे स्वस्थ न हो जायें तब तक वर्षा न हो। वर्षा के अभाव का यही कारण है। उनके स्वस्थ होने में एक महीना लग सकता है। तब तक उन्हें हम गाँव से दूर रखेंगे। तब यहाँ वर्षा होगी।''

जनता ने यह मान लिया। नारायण पांडे स्वयं माँ सहित पिता को रामापुर ले गया। जैसे ही वह चक्रपुर लौटा, भारी वर्षा हुई। लोगों ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा, ''तुम्हारी वाक्शुद्धि अद्भुत है। भविष्य में तुम्हीं राम मंदिर के पुजारी बनो।''

इसके एक महीने के बाद नारायण पांडे की पत्नी लक्ष्मी स्वस्थ हो गयी। पति-पत्नी दोनों मिलकर रामापुर गये। तब तक माधव पांडे बिल्कुल स्वस्थ हो गया था। पत्नी समेत नारायण पांडे ने पिता के पैर छूते हुए कहा, ''पिताश्री, मैं पितृ द्रोही हूँ। देव पूजाओं के योग्य नहीं हूँ। आप चक्रपुर आइये और पूजा की जिम्मेदारियाँ स्वयं संभालिये।''

माधव पांडे ने प्यार से अपने बेटे को गले लगाया और कहा, ''बेटे, तुममें वाक् शुद्धि है। स्वार्थ जब तक अपना फन नहीं फैलाता, तब तक वह रहेगी। स्वार्थ से छुटकारा पाना हो तो स्वानुभव चाहिये। श्रीराम की कृपा से वह तुम्हें प्राप्त होगा। भविष्य में सतर्क रहना। अब तुम पुजारी होने के सर्वथा योग्य हो।'' यों उन्होंने आशीर्वाद दिया।

# चुगलखोर

काशी राज्य पर ब्रह्मदत्त जिन दिनों में शासन करते थे, उसी समय बोधिसत्व ने मगध देश के एक गाँव में माघ नाम से एक क्षत्रिय परिवार में जन्म लिया। गाँव की समस्याओं पर चर्चा करने के लिए पचास परिवारों के पुरुष चौपाल पर जमा हो जाते थे। उस गाँव के ज़्यादातर लोग भले-बुरे का ख़्याल नहीं रखते थे, अक्सर चोरियाँ, डकैती और हत्याएँ करते थे और घूस देकर गाँव के अधिकारियों को खुश करके दण्ड पाने से बच जाते थे।

चौपाल की जगह बड़ी गंदी थी, वहाँ पर कूड़ा-करकट भरा होता था। इसे देख माघ ने अपने बैठने के वास्ते थोड़ी जगह साफ़ कर दी, लेकिन उस जगह पर अन्य लोगों में से किसी ने क़ब्जा कर लिया। इस पर माघ ने एक और जगह साफ़ कर दी, उस पर भी किसी ने अपना अड्डा जमा लिया।

इस प्रकार धीरे-धीरे माघ ने बड़ी सहनशीलता के साथ चौपाल की सारी जगह साफ़ कर दी। इसके बाद उस स्थान पर छाया के लिए उसने एक पंडाल बनाया, जिससे सारे गाँववालों को बड़ा आराम पहुँचा।

थोड़े ही दिनों में माघ के इस व्यवहार ने पचास परिवारों के पुरुषों को अपनी ओर आकृष्ट किया। वे सब माघ के नेतृत्व को स्वीकार करके गाँव की सेवा में लग गये। इसके बाद सबने मिलकर सभा-समारोहों के वास्ते एक विशाल मण्डप बनाया और पीने के वास्ते ठण्डे पानी का भी इंतजाम किया।

उसके बाद गाँव के लोगों ने माघ के मुँह से पँचशील सिद्धांत सीखे और अच्छा बर्ताव करने लगे। वे प्रतिदिन ऊबड़-खाबड़ सड़कों को समतल बनाते थे। रास्ते पर आने-जाने वाले रथों क़ो रोकने वाली डालों को काट देते थे। गड्ढे भर देते थे, तालाब खोदते थे, गीले प्रदेशों के बीच में से चलने के लिए ऊँची मेंड़ें बनाते थे। इस कार्य के लिए उनका पथप्रदर्शक और नेता माघ बना।

उस गाँव में एक अधिकारी था। गाँव के ज़्यादातर युवक शराबी, जुआख़ोर, हत्यारे और भ्रष्टाचारी थे, इसलिए उस गाँव के अधिकारी को जब भी मौक़ा मिलता, लोगों से रिश्वत ऐंठ लेता। जो रिश्वत न देता, उसे जुर्माना लगाकर ख़ूब पैसे वसूल करता था। लेकिन जब से माघ गाँव के युवकों का नेता बना, और उन्हें अच्छे रास्ते पर लाया, तब से गाँव के अधिकारी की आमदनी घट गई।

इस बात को दृष्टि में रखकर अधिकारी ने राजा के पास जाकर शिकायत की– "महाराज, हमारे गाँव में अराजकता फैल गई है! माघ नामक व्यक्ति के नेतृत्व में गाँव के सारे युवक हमेशा लाठियाँ, कुल्हाड़ियाँ, भाले व बर्छे लेकर सब जगह चक्कर लगाते रहते हैं। हर रास्ते पर उन्हीं लोगों का बोल-बाला है। उन लोगों की वजह से जनता के माल और प्राण ख़तरे में पड़ गये हैं। आपको सूचित करना मेरा कर्तव्य है। इसके बाद जैसी आपकी इच्छा।"

गाँव की हालत का पता लगा कर अगर अधिकारी की बात सही हो तो अत्याचार करने वालों को बन्दी बना कर लाने के लिए राजा ने अधिकारी के साथ कई सैनिकों को भेजा। सैनिक गाँव में पहुँच भी न पाये थे कि उन्हें गाँव के मुँहाने पर ही माघ अपने अनुचरों के साथ दिखाई दिया। उन सबके हाथों में लाठी, भाले, कुल्हाड़ी, इसी तरह का कोई न कोई हथियार था। सैनिकों ने जांच-पड़ताल तक किये बिना उन सबको

बन्दी बनाया और राजा के सामने हाज़िर किया। राजा ने उन सब के हाथों में हथियार देखा, मगर वे यह बात समझ न पाये कि वे लोग उन हथियारों का उपयोग गाँव की सेवा में कर रहे हैं। बस, उन्होंने यही सोचा कि गाँव के अधिकारी की शिकायत सही है, इसलिए उनकी कैफ़ियत तलब किये बिना आदेश दे दिया, ''इन लोगों को ले जाकर हाथियों के पैरों के नीचे कुचलवा दो।''

माघ और उसके अनुचरों को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवाने के लिए पट्ट हाथी को लाया गया। वह उन लोगों को कुचलने के बदले उनसे थोड़ी दूर पर ही रुक गया। इसके बाद एक और हाथी को लाया गया, वह भी पट्ट हाथी जैसे उन लोगों को देखते ही भाग गया।

यह ख़बर राजा को दी गई। मगर मूर्ख राजा ने सोचा कि उनके बदन पर मंत्र फूँके गये ताबीज होंगे, इसीलिए हाथी उनके पास पहुँचने में भड़क गये हैं। इस पर राजा ने सिपाहियों को फिर आदेश दे दिया, ''तुम लोग उनकी जाँच करो, उनके बदनों पर ताबीज हो तो खोलकर फेंक दो और फिर हाथियों को उन्हें कुचलने के लिए भेज दो!''

सब की जाँच की गई, पर किसी के बदन पर कोई ताबीज न था। यह ख़बर मिलते ही राजा ने उन्हें अपने पास भेजने की आज्ञा सुनाई। उसी समय वे पचासों आदमी राजा के सामने हाज़िर किये गये।

राजा ने उन लोगों से पूछा, ''बताओ, हाथी तुम लोगों को कुचलने में डर क्यों गये? तुम लोग

शायद उस वक़्त मंत्र जापते होगे? क्या तुम लोग मंत्र-तंत्र जानते हो?''

माघ ने आगे बढ़कर कहा, ''महाराज, आप का कहना सच है। हम लोग एक बहुत बड़ा मंत्र जानते हैं, उससे महान मंत्र दुनिया में कहीं दिखाई नहीं देता।''

''वह मंत्र क्या है?'' राजा ने पूछा।

''हम लोगों में से एक भी आदमी प्राणियों की हिंसा नहीं करता। दूसरों से ज़बर्दस्ती कोई चीज़ नहीं लेता। बुरा व्यवहार नहीं करता। झूठ नहीं बोलता। हम प्राणियों से प्यार करते हैं। सब के प्रति दया भाव रखते हैं। दान देते हैं, सड़कें बनाते हैं, तालाब खोदते हैं, सरायें बनाते हैं। यही हम लोगों का मंत्र है। यही हमारी शक्ति है!'' माघ ने जवाब दिया।

यह जवाब पाकर राजा अचरज में आ गया। उसने पूछा, ''हमने सुना है कि तुम लोग राहगीरों को लूटते हो! अपने हथियार दिखा कर जनता को डरा करके उनसे धन छीन लेते हो। क्या यह बात सच नहीं है?''

''महाराज, आपने किसी की शिकायत पर यक़ीन कर लिया है, मगर इसकी सच्चाई की जांच नहीं कराई है।'' माघ ने कहा।

''तुम लोग हथियारों के साथ पकड़े गये। इसलिए हमने जांच कराने की ज़रूरत नहीं समझी।'' राजा ने कहा।

''महाराज, उन हथियारों का उपयोग हम जनता के फ़ायदे के लिए करते हैं। कुल्हाड़ियों से रास्ते में फैली डालों को काट देते हैं। तालाब खोदने, सड़कें बनाने और सरायों का निर्माण करने के लिए आवश्यक साधन हमेशा अपने साथ रखते हैं!'' माघ ने अपनी कैफ़ियत दी।

राजा ने उन लोगों के बारे में जाँच-पड़ताल करवाई और असली बात जान ली कि अधिकारी का दोषारोप झूठा है। उस अधिकारी के रिश्वत का धन उन युवकों के हाथों में सौंप कर राजा ने उन्हें समझाया, ''आज से तुम्हीं लोग अपने गाँव का शासन करो। मैं किसी अधिकारी को नियुक्त नहीं करूँगा।'' साथ ही राजा ने पट्ट हाथी को भी उन्हें उपहार में दे दिया।
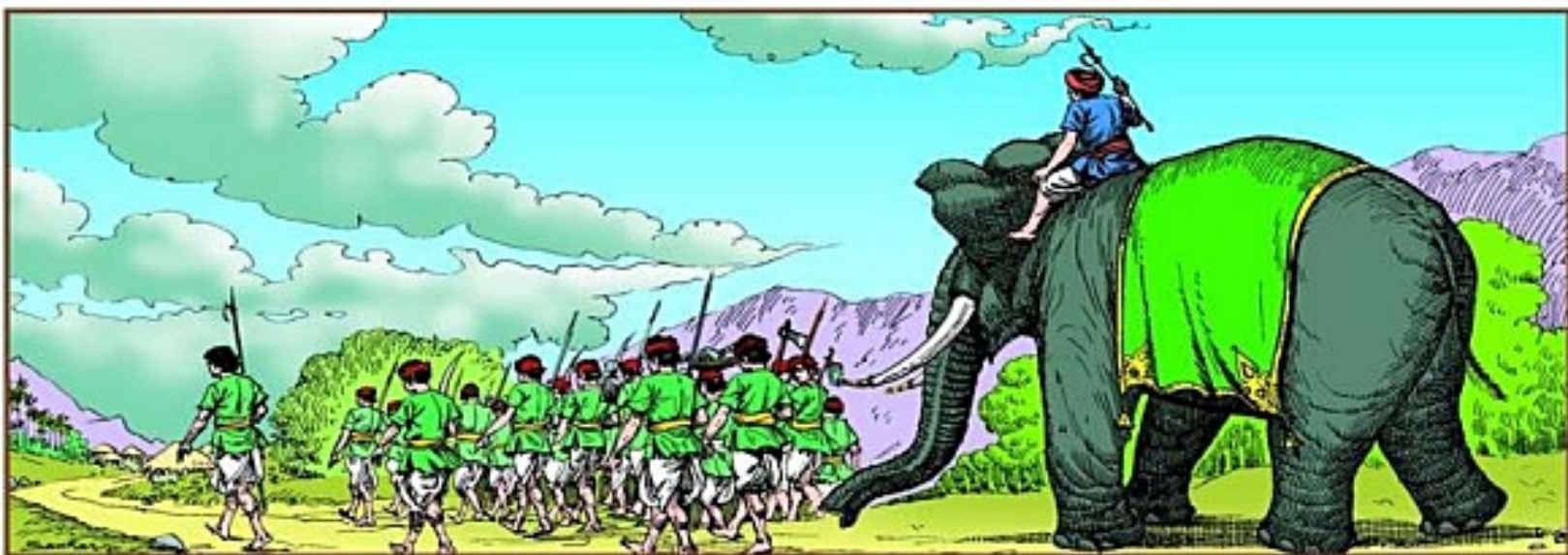
# रामायण

ताटका का संहार करके तथा मारीच और सुबाहु को मारकर विश्वामित्र ने अपना यज्ञ निर्विघ्न समाप्त किया। उस दिन रात को राम और लक्ष्मण आराम से सोये। फिर सवेरे ही वे उठे। नित्यकृत्य से निवृत्त होकर वे उस जगह गये, जहाँ विश्वामित्र व अन्य मुनि रहा करते थे। उन सबको नमस्कार करके विश्वामित्र से कहा, ''महामुनि, हमने आपकी आज्ञा पूरी कर दी है। यज्ञ में विघ्न उत्पन्न करनेवाले राक्षसों को आप के आशीर्वाद से बध कर दिया है। आप का यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हो चुका है। अब आप मुनिगण निरापद होकर जब तक चाहें तपस्या कर सकते हैं। यदि और कोई कार्य है, तो कृपया आज्ञा दीजिये।''

तब मुनियों ने राम लक्ष्मण से इस प्रकार कहा, ''मिथिला नगर के परिपालक महाराजा जनक एक बड़ा यज्ञ करने जा रहे हैं। हम सब भी उसे देखने वहाँ जा रहे हैं। जनक ने कभी एक यज्ञ करके उसके फलस्वरूप देवताओं से एक अद्भुत धनुष पाया था। देदीप्यमान उस धनुष की राजा जनक धूपबत्तियों और सुगन्धित द्रव्यों से पूजा करते हैं। उस को न देवता ही उठा पाते हैं, न राक्षस ही। फिर मनुष्यों का तो कहना ही क्या? कितने ही शक्तिशाली राजाओं और राजकुमारों ने उसको उठाने का प्रयत्न किया, पर कोई भी सफल न हो पाया। लेकिन उनकी पुत्री सीता उसे उठा लेती है। इसीलिए राजा ने यह घोषणा की है कि जो वीर उस धनुष पर बाण चढ़ा देगा, उसी से सीता का विवाह होगा। उस अवसर पर सीता स्वयंवर का भी आयोजन हो रहा है जिसमें देश के सभी राजा और राजकुमार आमंत्रित किये गये हैं। यदि

आप हमारे साथ आयें तो जनक महाराजा के यज्ञ के साथ सीता स्वयंबर और उस अद्भुत धनुष को भी देख सकेंगे।''

तुरंत यात्रा की तैयारियाँ हुईं। विश्वामित्र ने बनपालकों से कहा, ''मैं और मुनियों को साथ लेकर गंगा नदी के पार उत्तर में हिमालय पर्वत की ओर जा रहा हूँ।'' फिर उन्होंने सिद्धाश्रम की परिक्रमा की। सब मुनि, राम लक्ष्मण के साथ उत्तर की ओर निकल पड़े। उनके बाद सैकड़ों गाड़ियों में समिधायें व सामग्री बगैरह आईं। वे दिन भर चलते रहे। सूर्यास्त के समय वे शोना नदी के तट पर पहुँचे।

वहाँ सब ने स्नान किया। सन्ध्या-प्रार्थना की। राम लक्ष्मण विश्वामित्र के पास बैठे थे। उन्होंने विश्वामित्र से पूछा, ''स्वामी, वनावृत यह देश कहाँ है, इसका क्या वृत्तान्त है?''

इस प्रश्न के उत्तर में विश्वामित्र ने इस देश के बारे में और अपने वंश के बारे में यों कहा:-

''किसी ज़माने में ब्रह्मा का पुत्र कुश नाम का एक तपस्वी रहा करता था। उसने वैदर्भी नामक एक राजकुमारी से विवाह किया। उनके चार पुत्र हुए– कुशाम्ब, कुशनाभ, अधूर्तरजस और बसु। उन्होंने क्षत्रिय धर्म के निर्वहण के निमित्त अपने चारों लड़कों में अपनी भूमि वितरित कर दी और उनको आज्ञा दी कि वे न्यायपूर्वक शासन करें। उन्होंने चार नगरों को अपनी राजधानी बनाकर राज्य किया।

कुशाम्ब की राजधानी कौशाम्बी थी। कुशनाम की राजधानी का नाम महोदय था। अधूर्तरजस की राजधानी का नाम था धर्मारण्य। और बसु की राजधानी का नाम था गिरिब्रज। हम अब उनके शासित प्रदेश में हैं।

''इस देश के चारों ओर पाँच पहाड़ हैं। यह शोना नदी उन पर्वतों में से ही निकलती है। इसी के कारण यहाँ की भूमि उर्वरा और शस्यश्यामला है। यह नदी पूर्व से निकली है और पश्चिम की ओर जाती है।

''कुश के लड़कों में एक कुशनाभ भी था, मैं पहले ही बता चुका हूँ। उसकी पत्नी का नाम घृताची था। उनके सौ लड़कियाँ पैदा हुईं। वे सब के सब बहुत सुन्दर थीं। वे सौ लड़कियाँ जब मजे में गा नाच रही थीं तब वायुदेव उस तरफ़ आया। वायुदेव ने उन पर प्रसन्न होकर उनसे

बिवाह करने का प्रस्ताव रखा और कहा कि यदि उन्होंने बिवाह किया तो उनको ऐसा देवता बना देगा जो वार्धक्य और मृत्यु से मुक्त होंगे। परन्तु कन्याओं ने उसको डाँटा- डपटा और कहा कि वे उस व्यक्ति से ही बिवाह करेंगे, जिन्हें उनके पिता चुनेंगे। वायुदेव को गुस्सा आ गया। उसने उन सबको बौना बना दिया। तब वे कन्यायें रोती-रोती अपने पिता के पास गईं।

''अपनी लड़कियों की एकता, संगठन और वंशाभिमान को देखकर कुशनाभ बड़ा सन्तुष्ट हुआ। परन्तु उसने सोचा कि उनको अविवाहित रखना भी ठीक नहीं है। उसने उन सब का काम्पिल्यपुर के राजा ब्रह्मदत्त से बिवाह कर दिया। ब्रह्मदत्त के छूते ही वे सब पहले की तरह हो गईं।

''लड़कियों का विवाह हो जाने के बाद कुशनाभ को पुत्र की इच्छा हुई। उसने पुत्रकामेष्ठि यज्ञ किया। उसके एक लड़का हुआ, जिसका नाम गाधि था। वह बड़ा धर्मात्मा था। उस गाधि राजा का ही लड़का मैं हूँ। मेरी एक बहन थी। उसका नाम है सत्यवती। उसका रुचीक के साथ बिवाह हुआ। वह बड़ी पतिव्रता थी। हम क्योंकि कुशिक बंश के हैं, इसलिए हमें कौशिक भी कहा जाता है। हमारी बहन के नाम पर कौशिकी नाम की नदी भी निकली। क्योंकि मुझे अपनी बहन पर अभिमान है, इसीलिए मैं हिम प्रदेश में कौशिकी नदी के किनारे ही रह रहा हूँ। केवल यज्ञ के लिए ही सिद्धाश्रम गया था। बातों बातों में आधी रात गुज़र गई है। राम, अब तुम दोनों सो जाओ।''
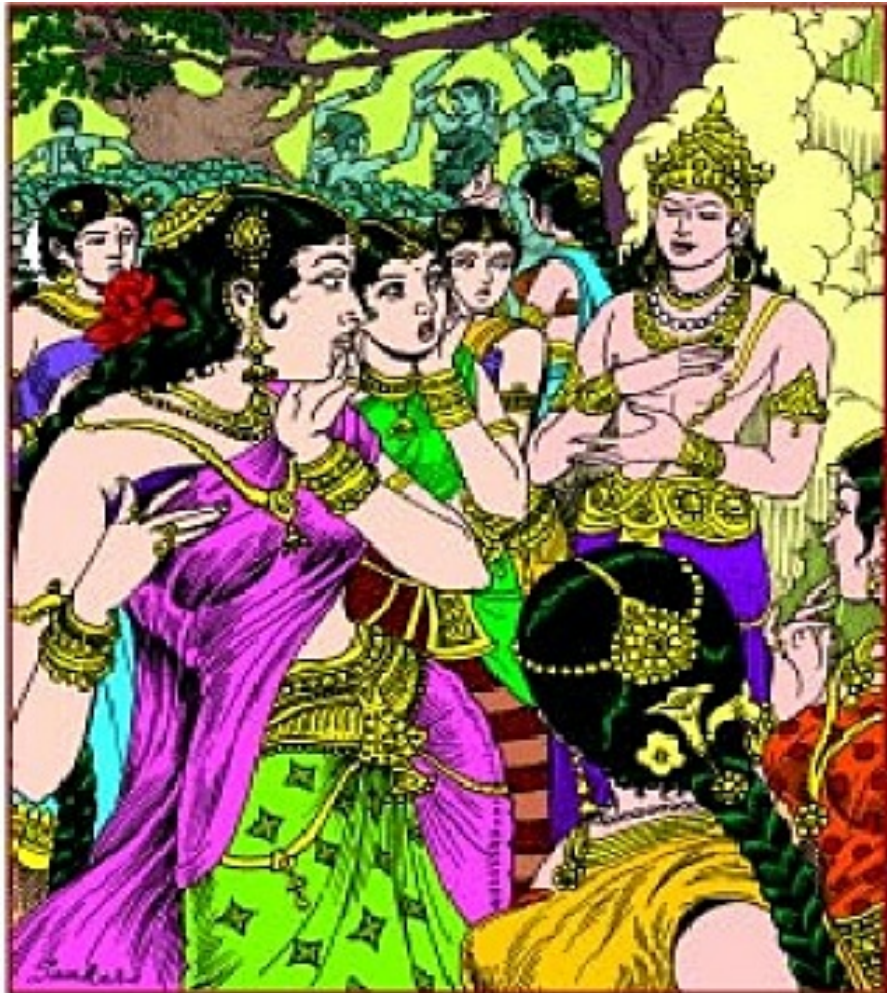
यात्रा के कारण दोनों ही थक गये थे। वे खूब सोये। वे तब तक न उठे, जब तक बिश्वामित्र ने उन्हें उठाया नहीं। नित्यकृत्य से निवृत्त होकर, शोना नदी को उन्होंने भी उसी घाट से पार किया, जहाँ से और लोग पार किया करते थे। वह कोई खास गहरी नदी न थी। बीच बीच में कई जगह रेत के टीले भी थे।

नदी पार करके उन्होंने फिर चलना शुरू किया। दोपहर के समय वे गंगा के तट पर पहुँचे। पवित्र गंगा को देखते ही सब बहुत आनन्दित हुए। वहाँ उन्होंने स्नान किया। देवताओं को तर्पण दिया। पितरों को तर्पण दिया। हवन करके भोजन के बाद वे गंगा के किनारे बिश्वामित्र के चारों ओर बैठ गये। तब महर्षि ने उनको गंगा का वृत्तान्त सुनाया:

"हिमवन्त नाम के पर्वत राजा की दो लड़कियाँ हैं। एक का नाम गंगा और दूसरी का नाम उमा है। उनमें से बड़ी गंगा को देवता पर्वत राजा को मना कर स्वर्ग ले गये। शिव ने उमा से विवाह किया। कालक्रम में सगर के पोते का पोता भगीरथ कठिन तपस्या करके स्वर्ग से गंगा को पृथ्वी पर लाया और उसे पाताल भी ले गया।"

विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को गंगावतरण की कथा, कुमारस्वामी के जन्म का वृत्तान्त सविस्तार सुनाया। उस दिन रात को सबने गंगा के दक्षिणी तट पर रात बिताई।

सवेरा होते ही वे किश्तियों में जिनमें दूब के आसन बिछे हुए थे, नदी पार कर उसके उत्तर तट पर पहुँचे। वहाँ उनको विशाल नगर दिखाई दिया। उस नगर को काफी देर तक देखने के बाद राम ने विश्वामित्र से पूछा, "महामुनि, इस नगर का परिपालन किस वंश के राजा कर रहे हैं? उनकी क्या कहानी है? मुझे उसे सुनने की इच्छा हो रही है।"

इस प्रश्न के उत्तर में विश्वामित्र ने देव-दानवों द्वारा क्षीरसागर के मंथन, उसमें से निकले विष को शिव द्वारा निगल जाना, अमृत का निकलना और उसके लिए देव-दानवों का लड़ना, विष्णु का मोहिनी के रूप में आना और अमृत का ले जाना, अपने विरोधियों को उसका मारना और शरणार्थियों की रक्षा करना आदि के बारे में सविवरण विश्वामित्र ने सुनाया। फिर उन्होंने यों बताया:–

जब अमृत के लिए देवता और दैत्यों के साथ युद्ध में दिति के सब लड़के इन्द्र द्वारा मार दिये गये तो दिति ने अपने पति कश्यप के पास जाकर कहा कि मुझे ऐसा पुत्र दो, जो इन्द्र को मार सके।

"तुमने हज़ार साल श्रद्धा और भक्ति भाव से पवित्र होकर तपस्या की तो तुम्हारे ऐसा लड़का होगा, जो तीनों लोकों को जीतेगा और इन्द्र को मारेगा।" कश्यप ने दिति को वर दिया।

दिति प्रसन्न होकर कुशप्लव नामक स्थल पर कठोर तपस्या करने लगी। इन्द्र उसके पास आता जाता रहा। वह उसकी भक्तिपूर्वक सेवा – शुश्रूषा किया करता, तथा पानी, समिधायें, दूब, कन्द मूल, फल आदि दिया करता था।

नौ सौ नब्बे वर्ष बीत गये और दस सालों में

दिति के गर्भ से एक ऐसा लड़का पैदा होनेवाला था, जो इन्द्र को मार सकता था। एक दिन दोपहर को दिति ने इन्द्र से यह कहा, "बेटा, तुम मुझ पर पंखा झल रहे हो, मेरे पैरों की मालिश कर रहे हो, जब मेरे लड़का पैदा होगा, मैं उससे कहूँगा कि वह तुम्हारे साथ मैत्री करे।" यह कहकर उसने वहाँ पैर रखे, जहाँ सिर रखना चाहिए था और वहीं सो गई।

उस समय वह अपवित्र हो गई। इस तरह के अवकाश की प्रतीक्षा इन्द्र कर रहा था। इन्द्र ने तुरंत उसके गर्भ में प्रवेश किया। गर्भ में स्थित पिंड को उसने अपने वज्र से सात टुकड़ों में काट दिया। इस प्रकार उसके सात बच्चे हुए, जो देवता के समान थे। वे मारुत कहलाये।

"राम, जब दिति यहाँ तपस्या कर रही थी, तो इसी प्रदेश में इन्द्र ने उसकी सेवा की थी। इसके बाद ईक्ष्वाकु महाराजा के विशाल नाम का लड़का पैदा हुआ। उसने ही इस महानगर का निर्माण किया। इसीलिए इसका नाम विशाला नगर पड़ा। अब इस नगर का परिपालन उसके वंश का सुमति नाम का एक राजा कर रहा है।" विश्वामित्र ने राम से कहा।

इस बीच सुमति को मालूम हुआ कि विश्वामित्र आदि आ रहे हैं, तब वह बन्धुओं, मित्रों तथा पुरोहितों के साथ उनका स्वागत करने आया। विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण का सुमति से परिचय कराया। वे सब सुमति के अतिथि होकर रात को वहीं रहे। अगले दिन उन्होंने मिथिला नगर की ओर प्रस्थान किया।

वे मिथिला नगर पहुँचनेवाले थे कि रास्ते में

उनको एक उजड़ा मन्दिर दिखाई दिया। वह आश्रम सुन्दर था, पर सूना-सा था। वहाँ कोई था नहीं। राम ने विश्वामित्र से पूछा, वह क्यों ऐसा है।

"एक समय इस आश्रम में गौतम महामुनि ने अपनी पत्नी अहल्या के साथ कठिन तपस्या की। इन्द्र उसकी तपस्या को भंग करना चाहता था और किसी तरह गौतम ऋषि में क्रोध उत्पन्न कर उनकी तपस की शक्ति को क्षीण करना चाहता था। इसके लिए उसने एक योजना बनाई। उसके अनुसार एक रात चन्द्रमा ने इन्द्र के अनुरोध पर अर्ध रात्रि में ही भोर का आभास उत्पन्न कर दिया। भोर समझ कर गौतम ऋषि नदी में स्नान करने चले गये। तभी इन्द्र गौतम ऋषि के वेश में अहल्या के पास आये। अहल्या ने उसे अपना पति समझ कर पत्नीवत व्यवहार किया। थोड़ी देर के बाद जब गौतम ऋषि स्नान करके लौटे तब मार्ग में अपने आश्रम से लौटते हुए इन्द्र को देखा। अपने पीछे में अपने आश्रम में आते देख गौतम ने क्रोधित होकर इन्द्र को शाप दे दिया। आश्रम में ॠषि ने आकर पत्नी को भी शाप दिया। उस शाप के कारण वह सिवाय वायु के किसी आहार के बिना अदृश्य हो, इस आश्रम में समाधिस्थ हो गई। क्योंकि गौतम ने शापमुक्ति का उपाय बताते हुए यह भी कहा था कि तुम्हें देखते ही वह शाप मुक्त हो जायेगी। इसलिए चलो, इस आश्रम में चलें। हम ऐसा करें कि वह अहल्या सब को दिखाई देने लगे।" विश्वामित्र ने कहा। युगों के बाद जड़ बनी अहल्या राम के दर्शनकर पुनः चेतन बन गई और शाप मुक्त हो गई।

जब वे अन्दर गये तो राम की आँखों को सूर्य की कान्ति-सी देवी के रूप में सुन्दर अहल्या दिखाई दी। जब उसने राम को देखा तो अन्य लोगों को भी वह दिखाई देने लगी।

राम लक्ष्मण ने उसके पैर छुए। पति की बात याद करके अहल्या ने राम लक्ष्मण के पैर धोये, अर्ध्य-नैवेद्य आदि दिया। उसी समय गौतम भी वहाँ पहुँच गये।

विश्वामित्र वहाँ से चलकर, राम लक्ष्मण को लेकर मिथिला नगर में पहुँचे। ***(क्रमशः)***

# दुश्मन में फूट

बेंकटगिरि नामक गाँव में बीरबाहू नामक एक किसान था। उसके चार एकड़ जमीन थी। वह कड़ी मेहनत करके फ़सल पैदा करता और उससे होनेवाली आमदनी से ज़ैसे-तैसे अपना परिवार चला लेता था।

एक साल बरसात न होने की वज़ह से अकाल पड़ा, साथ ही उस प्रदेश में चोरों का बोलबाला हो गया। मगर दूसरे साल अच्छी वर्षा हुई और खेत लहलहाने लगे।

बीरबाहू के खेत में ज्वार हरा-भरा था। उसमें भुट्टे निकल आये थे। पिछले साल अकाल पड़ने से चोरों का डर बना रहता था, इसलिए वीरबाहू रात के वक़्त खेत पर पहरा देता था। एक दिन की ठण्ढी रात में वह अपनी झोंपड़ी में लेटा हुआ था कि खेत में कोई आहट हुई। बीरबाहू ने सोचा कि खेत में चोर घुस आये होंगे। वह कंबल ओढ़, हाथ में लाठी लेकर खेत की ओर चल पड़ा।

थोड़ी दूर पर चार चोर खेत में घुसकर भुट्टे काट रहे थे। चांदनी रात थी। वीरबाहू ने उन्हें पहचान लिया। वे चारों उसी के गाँव के थे। उसे डर लगा कि अकेले ही चारों का सामना करना जान पर खेलना है।

वह सोच ही रहा था कि उसके दिमाग में एक उपाय सूझा। वह लाठी को वहीं पर छोड़ निडर चोरों के पास पहुँचा।

वीरबाहू के खेत से भुट्टे काटनेवाले चोरों में एक ब्राह्मण, एक बनिया, एक क्षत्रिय और एक किसान था।

वीरबाहू ने पहले ब्राह्मण के निकट पहुँचकर प्रणाम किया और कहा, "ब्राह्मण देवता, आपको इस आधी रात के वक़्त यहाँ आकर कष्ट उठाने की क्या ज़रूरत थी? आप किसी से कहला भेजते तो मैं ख़ुद भुट्टे लाकर आपके घर पहुँचा देता, आप जितने चाहें, उतने काट लीजिये। यह सब
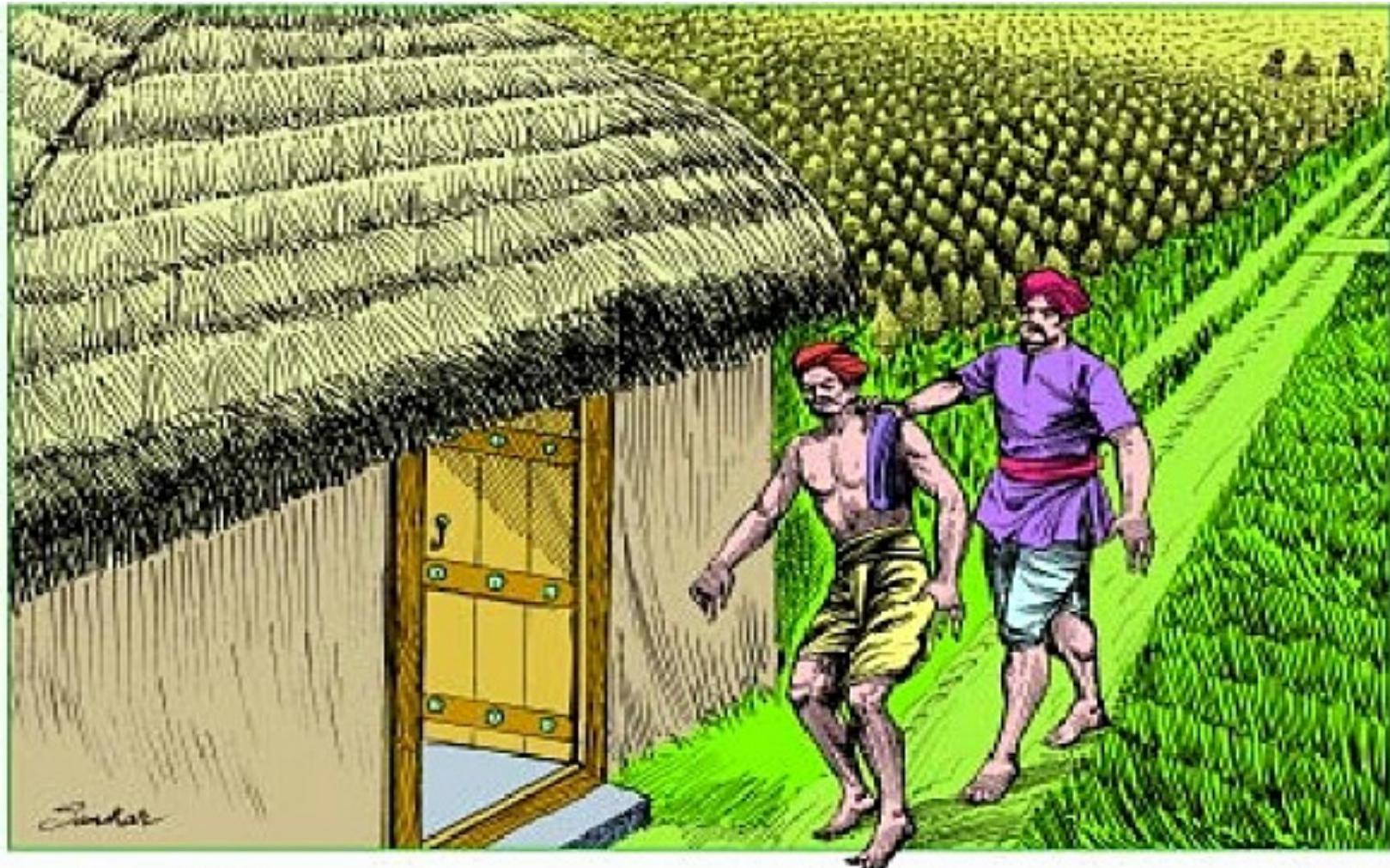
आपके आशीर्वाद का फल है।''

किसान की बातें सुन ब्राह्मण उछल पड़ा और तेजी के साथ भुट्टे काटने में निमग्न हो गया।

इसके बाद वीरबाहू क्षत्रिय के पास पहुँचा और बोला, ''राजा साहब, यह खेत आपका ही है, आप भी जितने चाहें, उतने भुट्टे काट लीजिये। हम तो आपकी प्रजा हैं। यह खेत आपका है।''

क्षत्रिय भी निश्चिंत होकर भुट्टे काटने लगा। तब वीरबाहू बनिये के पास जाकर बोला, ''सेठजी, आप मौक़े - बे मौक़े उधार देकर हमें उबारते हैं। इसलिए यहाँ पर आप को रोकने ही वाला कौन है? आप भी मन चाहा भुट्टे काटकर ले जाइये।'' इस पर बनिये का डर भी जाता रहा।

वीरबाहू तब किसान के पास जाकर बोला, ''अरे भाई, इन तीनों को हम-जैसे लोगों को दान देने, कर चुकाने या कर्ज के रूप में धन देना पड़ता है, लेकिन तुम मुझ जैसे एक किसान होकर चोरी करने आये हो, यह बिलकुल ठीक नहीं है। चलो, मेरी माँ के पास! वही इस चोरी का फ़ैसला करेंगी।'' यों कहकर उस किसान को वीरबाहू झोंपड़ी के पास ख़ींच कर ले गया। बाक़ी ने सोचा कि वीरबाहू के खेत से भुट्टे काटने का उन्हें हक़ है। लेकिन किसान को नहीं है, इसलिए उन लोगों ने किसान की कोई मदद नहीं की।

वीरबाहू थोड़ी देर बाद लौट आया और ब्राह्मण के निकट जाकर बोला, ''महाशय, मेरी माँ कहती हैं कि ब्राह्मण को चाहिये कि दान देने पर ले, पर

चोरी करना अपराध है, चलो उनके पास!'' यों कहते वीरबाहू ब्राह्मण का हाथ पकड़ कर खींच ले गया।

थोड़ी देर बाद फिर वीरबाहू लौट आया, तब तक बाक़ी दोनों चोर भुट्टे काट रहे थे। इस बार वह बनिये का हाथ पकड़ कर खींचते बोला, ''अजी सेठ साहब, मेरी माँ कहती हैं कि आपने हमें कभी कर्ज़ नहीं दिया, इसलिए आपका भुट्टे काटना अपराध है, इसलिए माँ के पास आकर आप ही अपनी सफ़ाई दीजिये।''

बनिये ने क्षत्रिय की ओर याचना भरी दृष्टि से देखा, लेकिन क्षत्रिय ने कुछ नहीं कहा। वह भुट्टे काटने में मशगूल था।

बनिये को झोंपड़ी के पास छोड़ वीरबाहू लाठी लेकर खेत में आ पहुँचा। तब तक क्षत्रिय भुट्टों की गठरी बांध रहा था। वीरबाहू के हाथ में लाठी देख वह गठरी के साथ तेज़ी से भागने लगा।

वीरबाहू ने क्षत्रिय का पीछा किया और उस पर लाठी चलायी। क्षत्रिय मार खाकर नीचे गिर गया। वीरबाहू ने रस्सी से उसके हाथ बांध दिये और कहा, ''तुम्हें तो और लोगों को चोरी करते देख दण्ड देना चाहिये, मगर तुम भी चोरी करने पर तुल गये हो! इसकी सज़ा तुम्हें भोगनी है, चलो, तुम्हें भी वही सज़ा दिलाता हूँ जो सजा बाक़ी तीनों को मिलने वाली है।''

''मुझे भी अपनी माँ के पास ले चलो, बाक़ी तीनों को तुम्हारी माँ ने माफ़ कर दिया तो मुझे भी माफ़ करेंगी।'' क्षत्रिय ने कहा।

वीरबाहू ने हँसकर कहा, ''भाई, मेरी माँ और कोई नहीं, यही ज़मीन है। उसकी ओर से मैंने तुमको बाँध दिया। बाक़ी तीनों को भी मैंने अपनी झोंपड़ी में बांध कर रखा है।''

इसके बाद वीरबाहू ने चिल्ला कर आसपास के खेतों में काम करनेवालों को बुलाया, और सारी घटना उन्हें सुनाकर सवेरे होते ही सबको थाने में भिजवा दिया।

इस प्रकार वीरबाहू ने अकेले ही अपनी बुद्धि के बल पर चारों चोरों का सामना किया और अपनी फसल की रक्षा के साथ-साथ चोरों को उचित सबक भी सिखाया।

# असली रहस्य

**राम** पचास साल की उम्र का किसान था। श्रृंगवर गाँव में ही नहीं, अड़ोस-पड़ोस के गाँवों में भी उसे बड़ा ही अक़्लमंद और विवेकी कहते थे। जब वह बीस साल का था, इस गाँव में खाली हाथ आया था। उस गाँव में आकर उसने दस एकड़ की उपजाऊ भूमि व कितनी ही संपत्ति कमायी।

एक दिन राम गाँव के तालाब के बांध पर के बरगद के वृक्ष के नीचे बैठकर तैरते हुए बतखों और तालाब के पानी पर उड़ते हुए बगुलों को देख कर मज़ा ले कहा था। उस समय दो युवक वहाँ आये और उसके पास बैठ गये।

थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद एक युवक ने उससे पूछा, ''चाचाजी, आपसे एक सवाल पूछना है।''

राम ने मुस्कुराते हुए कहा, ''ज़रूर पूछो। बड़ों से सवाल करके जानने की उम्र यही तो है।''

''चाचाजी, लोग कहा करते हैं कि जब आप इस गाँव में आये थे, तब खाली हाथ आये थे। आपके पास कुछ भी नहीं था। परंतु अब गाँव के संपन्न लोगों में से आप एक हैं। इतनी जायदाद आपने कैसे कमायी? इतने संपन्न कैसे हुए? इसके पीछे जो असली रहस्य है, वह है क्या? उस रहस्य को हमें बतायें।''

बडे ही प्यार से युवक की पीठ थपथपाते हुए राम ने कहा, ''बेटे, सहनशक्ति, परिश्रम, ईमानदारी, कौशल, ये ही असली रहस्य हैं। संपत्ति कमाने के लिए संक्षिप्त रास्ते नहीं होते।'' कहते हुए वह ज़ोर से हँस पड़ा।

*-नारायण त्रिपाठी*

चित्रः गाँधी अय्या
2
अपराजेय गरुड़
राजा महेन्द्रदेव भतीजे रवीन्द्रदेव को चन्द्रपुरी से देशनिकाला कर देता है। सैनिक उसे जंजीर के साथ सरहद पर छोड़ जाते हैं। आम पुरुष, जो यह जानता था कि वह सीमा पर है, वहाँ आकर उसे आदिवासियों की बस्ती में ले जाता है। बाद में ये दोनों नरेन्द्रदेव से मिलने जाते हैं।
आम पुरुष रवीन्द्रदेव को बताता है कि सर्पदेश में मन्दिर में क्या हुआ।
नागबन्धु के दोनों शिष्य भयविस्मित होकर देखते हैं कैसे वह अपने महाशत्रु का सामना करने के लिए एक विकराल सर्प का रूप धारण कर लेता है।
पंख परों में बदल जाता है और आदित्य गरुड़ का रूप ग्रहण कर लेता है।
गरुड़ सर्प को पकड़ लेता है और...
शिष्य अपने गुरु को बचाने की कोशिश करते हैं लेकिन असह्य ताप के कारण निकट जाने में असमर्थ हैं।
अग्निकुण्ड की धधकती ज्वाला में डाल देता है। सर्प नागबन्धु में बदल जाता है।
वे गुरु की आवाज सुनते हैं।
मेरा नाशवान शरीर भले ही भस्म हो गया लेकिन मेरी आत्मा चिरंजीवी रहेगी। मैं कुछ लोगों के माध्यम से बोलूँगा। मेरी भस्मी को एकत्र कर नरेन्द्रदेव के पास ले जाओ।

मैं अभी जीवित हूँ। आदिवासी तथा राजर्षि के सेवकों ने मेरी देखभाल अच्छी तरह की है।

....नागबन्धु के दो शिष्य मन्दिर की तबाही में बच गये हैं। उन्होंने कुछ अनुष्ठान आरम्भ किये हैं।

नागबन्धु की आत्मा नरेन्द्रदेव में प्रवेश करने की कोशिश कर रही है। वह केवल घायल हुआ है...

आकार ग्रहण करने से पूर्व तुम्हें उसे खत्म कर देना चाहिये।

अचानक गहन शान्ति छा जाती है। आदित्य अपनी आँखें खोलता है और देखता है कि पंख इधर-उधर उड़ रहा है। आवाज अब उसके पिता के चित्र से सुनाई पड़ती है।

...वे अगली पूर्णिमा को मानव-बलि देने की तैयारी कर रहे हैं। भस्मी कलश को नष्ट करना होगा नहीं तो नरेन्द्रदेव दूसरा नागबन्धु बन कर खड़ा हो जायेगा।

शैतान पुनः अपना सिर उठाने का प्रयास कर रहा है।...
...आदित्य, जब तक तुम सच्चे और निस्वार्थ हो, कोई दुरात्मा राज्य में प्रवेश नहीं कर सकती।
दूसरे दिन बस्ती के आदिवासी आदित्य से मिलते हैं।
महाराज! हमारे कुछ युवक बहुत दिनों से गायब हैं। हो सकता है उन्हें लालच देकर बस्ती छोड़ने के लिए कहा गया हो।
घबराने की बात नहीं है। मैं पता लगा कर कार्रवाई करता हूँ। मैं पहले राजा से सलाह लेने के लिए मिल लेता हूँ।
आदित्य राजा महेन्द्रदेव से मिलने जाता है।
मैं तुम्हें बुलाने ही वाला था।
क्या कुछ जरूरी काम था, महाराज?
तुम्हारे राज्याभिषेक से ज्यादा जरूरी और क्या हो सकता है, आदित्य?
मैं इसे भूला नहीं हूँ। विस्तृत ब्योरा तैयार किया जा रहा है और इन्तजाम शुरू हो गया है।...
इसे टाला नहीं जा सकता, आदित्य। एक शुभ दिन निश्चित करने के लिए मैंने राजगुरु को बुला भेजा है।
महाराज, कुछ सूत्रों से पता चला है कि नरेन्द्रदेव जीवित है और रवीन्द्रदेव उससे मिल भी चुका है। उन्हें पहाड़ियों की एक गुफा में देखा गया है।

लेकिन नरेन्द्रदेव के पैर अब नहीं रहे। क्या यह सच नहीं है?
यह सच है, लेकिन उसे एक गुफा में ले जाया गया है...।
यदि रवीन्द्रदेव राज्य में कहीं आ जाये तो उसे कड़ी से कड़ी सजा मिलेगी।
हमारी सीमाओं पर कड़ा पहरा है, महाराज। मुझे डर यह है कि बाप-बेटे मिलकर अराजकता फैलाने के लिए दूसरों को भड़का सकते हैं।
तुम इन सब का मुकाबला तभी कर सकते हो जब तुम राजा बन जाओ।
आह! राजगुरु आ गये! प्रणाम, गुरुदेव!
प्रणाम! कृपया आसन ग्रहण कीजिये।
सर्वशक्तिमान प्रभु तुम दोनों की रक्षा करें!
गुरुदेव! मैंने उसके राज्याभिषेक की तिथि निश्चित करने के लिए आप को बुलाया है।
मैंने पंचांग देखा है। पूर्णिमा सबसे शुभदिन रहेगा। पाँचवें दिन पूर्णिमा है।
केवल पाँच दिन रह गये।
तब तक सारे इन्तजाम पूरे हो जायेंगे।
बेटे, मुझे यह कहना है कि आप दोनों महल से बाहर किसी भी हालत में नहीं जायें। और राज्याभिषेक से पहले तीन दिनों तक अनुष्ठान चलेंगे।
क्रमशः

भारत की सांस्कृतिक घटनाएँ

# पर्वोत्सव का अवसर - होली

रंगों के त्योहार - होली से एक दिन पहले मार्च महीने में राजस्थान के जयपुर में **हाथी पर्वोत्सव** आयोजित किया जाता है। बड़े ही मनमोहक रूप से सजाये गये हाथी न केवल मन्थर गति में सन्तुलित चाल से चलते हैं बल्कि दौड़ में भी हिस्सा लेते हैं और पोलो भी खेलते हैं। यह शानदार प्रदर्शन आयोजित किया जाता है विस्तृत चौगन स्टेडियम में जो साथ ही साथ आयोजित संगीत और नृत्य के कार्यक्रमों से जीवन्त हो उठता है। दर्शकों को सन्देह हो सकता है कि यह, समारोह के साथ आयोजित शोभायात्रा, जो पर्वोत्सव के आरम्भ का सूचक है, गणतंत्र दिवस के परेड का छोटा रूप तो नहीं है। क्योंकि शोभायात्रा में न केवल सुसज्जित हाथी और ऊँट होते हैं, बल्कि घोड़ों पर सवार बल्लमबरदार, रथ, तोपें और पालकियाँ भी होती हैं।

आकर्षण के केन्द्र निस्सन्देह हाथी ही होते हैं जिनमें अधिकतर हाथिनी होती हैं। उनके ललाटों और शुण्डों पर बड़े ही रुचिकर ढंग से चित्रांकन किया जाता है। पैरों पर मोटीफ चित्रित किये रहते हैं। पूँछ और पैरों में घंटियाँ और पायल बंधे होते हैं।

पर्वोत्सव का उत्कर्ष उस समय देखते ही बनता है जब विदेशी पर्यटक अपार आनन्द के साथ उसमें हिस्सा लेते हैं। उन्हें एक-दूसरे के साथ होली खेलने के लिए रंगीन पानी से भरी पिचकारियाँ और रंग के चूर्ण दिये जाते हैं। खुशी से पागल हो वे अपने को भूल जाते हैं। हाथी पर्वोत्सव का आयोजन राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा किया जाता है।

मार्च में, नृत्य और संगीत का पर्वोत्सव महाराष्ट्र में भी मनाया जाता है। **एलोरा पर्वोत्सव** के नाम से प्रसिद्ध यह आयोजन, एलोरा के विख्यात विश्व-धरोहर गुफा-मन्दिरों में किया जाता है। वहाँ कुल ३४ गुफाएं हैं जो चमाद्री पहाड़ियों के ढलानों को काट कर बनाई गई हैं। सन् छः सौ और सन् एक हजार के बीच बनी ये गुफाएँ बौद्ध, जैन और हिन्दू सम्प्रदायों की हैं। कैलास मन्दिर की गुफा सबसे अधिक प्रमुख है। यह विश्व भर में, मात्र एक अखण्डित शिला में गढ़ी गई विशालतम एकाश्मक संरचना है, जिसे करीब ७,००० मजदूरों ने १५० वर्षों से अधिक समय में पूरा किया। इस महोत्सव पर गुफाओं की शानदार पृष्ठ भूमि में विविध नृत्य शैलियों तथा संगीत प्रणालियों की श्रेष्ठ प्रतिभाओं द्वारा कला-प्रदर्शन किया जाता है। गुफाओं के सदियों पुराने इतिहास और संस्कृति को आत्मसात करते हुए वहाँ का पर्यटन एक मुग्धकारी अनुभव है। महोत्सव का आयोजन महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम द्वारा किया जाता है।

# आप के पन्ने आप के पन्ने

## तुम्हारे लिए विज्ञान

## ''यह झूठ है!''

अपराध की दर में तेजी से हो रही वृद्धि के कारण झूठ पकड़नेवाली मशीन के महत्व को नज़र अन्दाज नहीं किया जा सकता। लेकिन क्या तुम्हें विश्वास होगा यदि यह कहा जाये कि स्नायु विज्ञान सम्बन्धी एक अवस्था के रोगी, जिसे वाचाघात या ऐफेसिया कहते हैं, झूठ बोलनेवालों को पकड़नेवाली मशीन से कम नहीं है। शायद नहीं। खास कर तब, जब कि लोग जानते हैं कि वाचाघात की हालत में रोगी शब्दों को समझने की या उन्हें प्रयोग में लाने की क्षमता खो बैठते हैं। यह स्थिति गंभीर दिमागी नुकसान के कारण पैदा होती है।

स्नायु वैज्ञानिकों ने वाचाघात के रोगियों के साथ अनेक प्रयोग किये हैं और हर बार उन रोगियों ने मानव-झूठ-संसूचक के रूप में अपनी निपुणता सिद्ध कर दी है। मैसशुसेट्स विश्वविद्यालय के डॉ. ओलिवर सैक्स ने ऐसे लोगों के साथ बहुत व्यापक रूप से काम किया है। अपनी पुस्तक में एक घटना के प्रसंग में उन्होंने लिखा है कि टी.वी. पर प्रदर्शित एक प्रेसिडेण्ट पद के उम्मीदवार को भाषण देते हुए अनेक वाचाघात रोगी देख रहे थे। वह उम्मीदवार हर तरह का वादा कर रहा था। लेकिन वह वाचाघात के रोगियों पर प्रभाव नहीं डाल सका जिन्होंने इसके शब्दों के पीछे छिपे झूठ और फरेब को देख लिया था। परिणाम क्या हुआ? भाषण के अन्त में पूरा हॉल ठहाकों से दहल गया।

## तुम्हारा प्रतिवेश

## डूबते नगर को बचाओ

वेनिस नगर १२० द्वीपों पर बसा हुआ है, जो पो और पैव नदियों के मुहानों के बीच, समुद्रताल में, नहरों से निर्मित हुए हैं।

वर्तमान भूजल सारिणी तथा विश्वव्यापी जलवायु सम्बन्धी परिवर्तन वेनिस के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं तथा लगातार बाढ़ों से वेनिस की परेशानी और बढ़ गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि आनेवाले ५० वर्षों में नगर का आठ प्रतिशत भाग जलमग्न हो सकता है। एक सहायता संघ ने नगर को डूबने से बचाने के लिए एक परियोजना तैयार की है। परियोजना के अनुसार जहाँ-जहाँ समुद्र का जल समुद्रताल में प्रवेश करता है, वहाँ-वहाँ अन्तर्जलीय फाटक बनाये गये हैं। ये फाटक तब तक खुले रहेंगे जब तक समुद्र का जलस्तर निम्न है। जलस्तर के बढ़ने पर फाटक बन्द कर दिये जायेंगे। समस्या यह है कि अधिकतर समय तक फाटकों को बन्द रखना पड़ेगा।

# आप के पन्ने आप के पन्ने

## क्या तुम जानते थे?

# टूथब्रश का जन्म

सम्पूर्ण भूमण्डल के सभ्य मानव समाज में एक प्रातः अनुष्ठान समान रूप से प्रचलित है– दाँतों को बेदाग साफ और मोती की तरह सफेद रखने के लिए ब्रश करना। इस काम के लिए प्रयोग में आनेवाला बेचारा टूथब्रश भी सर्वनिष्ठ रूप से प्रयुक्त किया जाता है।

क्या तुम जानते थे कि टूथब्रश के आविष्कार ने ही पूर्व अपराधी के भाग्य को पलट दिया। एक अंग्रेज कैदी विलियम ऐडिस को सन १७७० में टूथब्रश के आविष्कार का श्रेय दिया गया। ऐडिस ने भोज उच्छिष्ट की एक हड्डी और कुछ कड़े तिनकों (जिन्हें एक झाड़ू से उसने लिया था) से टूथब्रश का एक नमूना बनाया। ऐडिस ने हड्डी में कुछ सुराख बनाये और फिर उनमें तिनकों को डाल दिया। जेल से छूटने के बाद विलियम ऐडिस टूथब्रश का निर्माता बन गया।

## अपने भारत को जानो

# इस महीने में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित अपने ज्ञान को ताजा करें

१. आदि शंकराचार्य ने अद्वैत दर्शन की प्रतिष्ठा की; रामानुजाचार्य के दर्शन को विशिष्टाद्वैत कहते हैं। माधवाचार्य के दर्शन का क्या नाम है?

२. उस मठ का नाम क्या है जो आदि शंकराचार्य द्वारा पुरी, उड़ीसा में स्थापित किया गया था?

३. दक्षिण भारत में वैष्णववाद का प्रचार किसने किया?

४. *'महाभारत'* में सबसे बड़ा अध्याय कौन-सा है?

५. छः विष्णुपुराण कौन-कौन से हैं?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

# चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

TATA NARAYANAMURTHY

ANANTHA PRABHAKAR DUTT

*चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,*

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

## बधाइयाँ

पर्याय उपाध्याय
जी.१९/१९,
नार्थ टी.टी.नगर
भोपाल (म.प्र.)

## विजयी प्रविष्टि

नाक पर नकाब डाल डाकू कहलाऊँ !
आँख पर चश्मा रख मैडम बन जाऊँ !

## 'अपने भारत को जानो' प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. द्वैत दर्शन ।
२. गोवर्धन मठ ।
३. विष्णु के बारह भक्त जिन्हें आलवर कहते हैं ।
४. बारहवाँ अध्याय ।
५. विष्णुपुराण, भागवत पुराण, गरुड़पुराण, नारद पुराण, पद्मपुराण तथा वराह पुराण ।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

# A TREASURE-TROVE FOR TALENTED TOTS

**PAY ONLY RS.150 FOR ANNUAL SUBSCRIPTION AND SAVE RS.30**

## MAHALACTO WORD POWER CONTEST

Make as many meaningful words as you can by using the letters from the following sentence given within brackets.

**(Maha Rich Maha Fun Maha Yummy Nutrine MAHALACTO)**

### Steps to be followed to win the prizes

1. Make as many meaningful words as you can by using the letters from the above sentence given within brackets.
2. Write down all the words in a piece of paper (list of words).
3. Fill the details in the enclosed coupon.
4. Collect 10 empty MAHALACTO wrappers.
5. Attach all of them together (list of words + coupon + 10 empty MAHALACTO wrappers)
6. Send all of them to the following address:

**Post Box No. 1056, Kilpauk, Chennai - 600 010.**

**Closing Date : March 10, 2006.**

First Prize - 25 Nos. Konica Camera

Second Prize - 200 Nos Wrist-watches

Third Prize - 750 Nos. 5-in-1 Games Set

COUPON

Name

Age Date of birth Class School

Home address

PIN Code

No. of words list attached

Signature of Participant